केसरिया स्वर में प्रकाशन हेतु सभी सम्मानित रचनाकार मनीषीगण अपनी रचनाएं– केसरिया स्वर–बी0 75 राजाजीपुरम लखनऊ उ0प्र0, 206017 पते, पर प्रेषित करें। कृपया अपनी रचना की मूलप्रति अपने पास सुरक्षित रखे, किसी भी प्रकार की प्राप्ति स्वीकृति या रचना की वापसी संभव नहीं है।

शरद सिंह 'शरद'
प्रधान संपादक
8960415670

TITLE CODE - UPMUL 00778

केसरिया स्वर

हिन्दी पाक्षिक समाचार पत्र

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवं, कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्ति नाशनम् : महर्षि व्यास

दिनकर दर्शन चैरिटिबल ट्रस्ट

द्वारा प्रदत्त
(साधनहीनों एवं असहायों के लिए)
निःशुल्क विधिक सलाह हेतु
संपर्क करें– 9415582926
संपर्क का समय व दिन– रविवार–
प्रातः 9–10 बजे तक
किसी भी सलाह पर अमल से पूर्व अपने अधिवक्ता का मंतव्य अवश्य प्राप्त कर लें दिनकर दर्शन चैरिटेबल ट्रस्ट किसी भी विधिक परिणाम की गारण्टी नहीं देता।

शरद मिश्र 'सिंधु'
अधिवक्ता

वर्ष–01 अंक –01 (प्रवेशांक) लखनऊ, 01 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2022 मूल्य–3 रूपये पृष्ठ–8

प्रधानमंत्री मोदी ने दिया विश्व को भारत का शांति संदेश

विगत दिनों समरकंद में 'शंघाई सहयोग संगठन' की बैठक में उपस्थित भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रूस के राष्ट्रपति बलादिमीर पुतिन को भारत का संदेश दिया, जिसके एक–एक शब्द से शान्ति, अंहिसा और करूणा का स्वर मुखरित हो रहा था, 'यह समय युद्ध का नहीं है' यह वाक्यांश नरेन्द्र मोदी के अधरों से निकलते ही पश्चिमी देशों में आशा का संचार कर गया। निश्चित रूप से रूस भारत का सदा से सबसे भरोसेमंद मित्र रहा है उसकी अपनी सुरक्षा की चिंताएं भी हैं, किन्तु भारत इन विषमताओं के बीच भी तटस्थता बनाए रखने में सफल रहा है।

अधिवक्ताओं के लिए कल्याणकारी योजनाओं की अतीव आवश्यकता

जनपद न्यायालय प्राँगण लखनऊ में अधिवक्ता आंदोलन संघ के संरक्षक अधिवक्ता रमेश प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न संगोष्ठी में अधिवक्ता हित की मांगों का पुरजोर समर्थन किया गया, अधिवक्ता पेंशन योजना, उच्च आयुर्विज्ञान संस्थानों में अधिवक्ताओं का निःशुल्क इलाज, सर्वोच्च न्यायालय में हिन्दी लागू किए जाने आदि विषयों पर सर्वसम्मति से आंदोलन को गतिमान करने का संकल्प लिया गया। अधिवक्ता आंदोलन संघ के अध्यक्ष ने अधिवक्ता हितों के साथ–साथ छोटे व्यापारियों, किसानों और छात्रों की समस्याओं को भी उठाया। किसानो की बिजली माफी, ऋण माफी के साथ–साथ छात्रों की बढ़ी फीस वापस लेने तथा सभी सरकारी संस्थानों में छात्रों से ली जा रही फीस पूर्णतया माफ किए जाने की माँग पर सभी उपस्थिति अधिवक्ताओं ने सहमति जताई। छोटे व्यापारियों को भी राहत देने के लिए कदम उठाए जाने की सरकार से अपील की गई।

मां के चरणों में एक गीत

शब्द सब रसमय करो मां
लेखनी में स्वर भरो मां।
पावनी वागीश्वरी तुम,
शारदे वरदायिनी तुम,
चेतना को धवल कर दो,
हृदय की संजीवनी तुम,
सुधा घट मन में धरो मां।
लेखनी में स्वर भरो मां ।।
जब कभी गतिमान हो यह,
कलम कवि की शान हो यह,
वंदना में तुम बसी हो,
हर सृजन को भान हो यह
पृष्ठ पर मसि बन झरो मां।
लेखनी में स्वर भरो मां।।
स्यंदनो से बोल गतिमय,
कामना मैं करूं तन्मय,
मां विराजो लेखनी में,
सौंप दो मुझको मधुर लय,
और सारा तम हरो मां।
लेखनी में स्वर भरो मां।।
हो निरर्थक शब्द चाहे,
अर्चना में खोल बांहें,
याचना की आरती को,
मुझ शरद के स्वर निबाहें,
पुत्रिवत मुझको वरो मां ,
लेखनी में स्वर भरो मां।।
शब्द सब रसमय करो मां।
लेखनी में स्वर भरो मां।।

शरद सिंह 'शरद'
प्रधान संपादिका
केसरिया स्वर पाक्षिक

बुलडोजर से बढ़ी सरकार की साख

उ0प्र0 के मुख्यमंत्री महंत योगी आदित्यनाथ की दंगा और आपराधिक कृत्यों के विरूद्ध सख्ती ने सूबे में दंगा रहित माहौल बनने में महती भूमिका निभाई। दशकों पूर्व जब अलीगढ, मेरठ, कानपुर आदि शहरों में कई–कई दिनों तक कर्फ्यू लगाया जाता था, तब ऐसी शांतिपूर्ण स्थिति की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, किन्तु योगी सरकार के बुलडोजर के आक्रामक उपयोग के कारण दंगाई अब उपद्रव की कल्पना से भी काँपने लगे हैं।

दिसम्बर 2023 तक तैयार हो सकता है राम लला के भव्य मंदिर का प्रथम तल

अयोध्या में मंदिर निर्माण का कार्य पूरी तन्मयता से जारी है। पत्थरों को तराशने के लिए लगभग 1200 शिल्पकार निरंतर कार्यरत हैं। राजस्थान के बंशीपहाड़पुर में कार्यशालाओं के अतिरिक्त कार सेवकपुरम और राम मंदिर परिसर में भी आवश्यकतानुसार पत्थर तराशे जा रहे हैं।

केसरिया स्वर के लोकार्पण हेतु पूर्व उप मुख्यमंत्री उ0प्र0 सरकार डॉ0 दिनेश शर्मा जी को आग्रह पत्र प्रदान करते हुए केसरिया स्वर की टीम

नये प्रदेश अध्यक्ष की नियुक्ति के बाद से भाजपा कार्यकर्ताओं में उत्साह का संचार

एक व्यक्ति एक पद के सिद्धाँत पर चल रही भाजपा ने, भूपेन्द्र सिंह के रूप में नए प्रदेश अध्यक्ष की नियुक्ति कर एक तीर से कई निशोने साध लिए। पश्चिम उ0प्र0 में भूपेन्द्र सिंह की सक्रियता उनके राजनैतिक जीवनयात्रा के प्रारम्भ से ही रही है, तो लंबा राजनैतिक अनुभव उन्हें कर्मठ संगठनकर्ता के रूप में स्थापित करता है।

जातिवाद की कुण्ठा और श्राप से अभिशप्त उत्तर भारत में राजनेताओं पर इस बात का भारी दबाव है कि वे सभी भारतीय सनातन संस्कृत के अनुयायिओं को एक साथ रखकर भारत के उत्तरोत्तर भौतिक एवं साँस्कृतिक विकास की पटकथा लिखें। आज के दौर में भी भारतीय उर्जा के स्रोत काशी और मथुरा कसमसा रहे हैं, वहीं मानवता पर अभिशाप बनकर टूट रहे 'जेहाद' की अवधारणा तेरहवी सदी से लेकर आज तक 'सर तन से जुदा' के नारे लगा रही है। किंतु योगी और मोदी के नेतृत्व में भारत दुनिया को यह संदेश देने में सफल रहा है, कि, यहाँ हिंदुत्व की केसरिया आभा के प्रतीक मोहन भागवत और इस्लाम के नीति निर्धारक, एक साथ इस्लामी शिक्षा के केंद्र मदरसे के भीतर बैठकर माँ भारती की और भारत माता की खुशहाली की योजनाएं एक साथ मिलकर बना रहे हैं, यहाँ स्वतंत्रता के बाद से ही अब्दुल हमीद से लेकर मनोज पाण्डे तक लाखो सैनिकों ने अपने समवेत प्रयास और सर्वोच्च बलिदान से देश को सुरक्षित रखा है। इसी धारा में भूपेन्द्र सिहं की कार्यशैली भी कार्यकर्ताओं में आशाओं को जन्म देती है, कि भविष्य में भारत शान्तिपूर्ण वातावरण के साथ अपने कर्तव्य पथ पर गतिमान होगा। इस दिशा में मोहन भागवत के साथ भारतीय इमाम परिषद के अध्यक्ष उमर अहमद इलियासी की मुलाकात अहम भूमिका निभायेगी।

उ0प्र0 भाजपा के नवनियुक्त अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह का अभिनन्दन करते हुए मीडिया सह संयोजिका अवध प्रांत कु0 स्वाती सिंह

देश तुम्हारे लिए हमारी सांसे चलती हैं : शरद मिश्र 'सिंधु' अधिवक्ता

संपादकीय

आदि अंत की संकल्पना से परे, केसरिया रंग की सूर्याभा निरन्तर सृष्टि को प्रकृति के अनुसार प्रकाशित करती चली आ रही है। यदि प्रातः काल की रश्मियाँ प्रकृति के प्रभापुंज का अंग और स्रोत है, तो निशाकाल की कालिमा की भी अपनी उपादेयता है। यह अवश्य है कि, यदि निशाकाल के तमस का कालखण्ड बढ़ने लगता है तो विभिन्न काया में आबद्ध आत्माएं प्रकाश की आकांक्षा में चीत्कार कर उठती है। अपनी भारत भूमि में भी पिछले लगभग तीस–चालीस वर्षो से तमस की कालिमा गहराती चली जा रही है, विसंगतियों का हिमालय ऊँचा उठता जा रहा है, किन्तु उसी हिमालय में भारतीय सनातन संस्कृत की आधुनिक विजय–गाथा की जड़ी बूटियाँ संजीवनी बनकर हमारे समक्ष उपस्थित हो रही हैं जो कि, आशा का संचार करती हैं। विगत कालखण्ड ने देव भूमि काश्मीर में माँ गिरिजा किट्टू को 'ओम नमः शिवाय' कहते हुए क्रूर पौशाचिक जेहादियों द्वारा, आरा मशीन पर काटे जाते हुए भी देखा है, तो इलाहाबाद उच्च्य न्यायालय में सन् 2008 में बहस करते हुए अमर शहीद अधिवक्ता श्रीकांत अवस्थी जी को अवमानना में जेल भेजे जाने पर, अधिवक्ता स्वाभिमान के रक्षार्थ अपना अप्रतिम, (किन्तु सृष्टि का क्रूरतम) बलिदान देते हुए भी देखा है। उक्त अधिवक्ता श्रीकांत अवस्थी जी की हत्या का प्रकरण, व्यवस्था के मुँह पर कालिख पोतता हुआ, ए सी सी– 2010 पृष्ठ 61 जनवरी पार्ट–५ में दर्शित भी है। 'केसरिया स्वर' भारतीय सनातन परम्परा के अनुसार रचनात्मक एवं सकारात्मकता का उत्सव मनाने का तो प्रयास करता रहेगा, किन्तु वह गलत पर रूदन की परम्परा का निर्माण नहीं करेगा। आज के संदर्भो में हम देखते हैं कि, साधनों की संपन्नता एक ऐसी दीवार खड़ी करती जा रही है, जो साधनहीन आम जन के लिए जीवन यापन को दुरूह बनाती जा रही है, एक तरफ उन्हीं संवैधानिक अधिकारों से युक्त भारतीय नागरिक प्रतिदिन हजारों करोड़ रूपयों की आय एकत्र कर रहा है तो दूसरी तरफ उन्हीं अधिकारों से युक्त नागरिक दरिद्रता और विपन्नता को झेलते हुए आत्महत्या तक कर रहा है। यदि हम मुनष्य हैं तो ऐसी स्थितियों के समुचित सुधार के लिए हमें चिंतन करना पड़ेगा। हम मार्क्स की भाँति सर्वहरा और बुर्जुआ के संघर्ष में फँसकर आधुनिक युग का अभिशाप तो नहीं बनना चाहेंगे, किन्तु हम दीनहीन वनवासी, ऋषियों, ब्राहमणों, आदिवासियों को साथ लेकर, भगवान राम की तरह अपने आत्मबल से अन्यायी रावणों की लंका में अपने ओज के हनुमान और शौर्य के अंगद को अवश्य भेजते रहेंगे, और वहाँ पहुंचेंगे भी, बदलाव के लिए।

अपने इस प्रेवशांक के जरिये हम यह भी स्पष्ट कर दें कि आजादी के संघर्ष के समय जब वैचारिक जंजीरों से अखबारों, पत्रिकाओं की धनुष पर सवार होकर विचार श्रृंखलाओं की ज्वालाएं, अंग्रेजी सत्ता के यूनियन जैक को भारत भूमि में जलाकर भस्म कर रही थी तो उन अखबारों और पत्रिकाओं के कर्णधार, अधिवक्ता, साहित्यकार, और बुद्धिजीवी ही थे न कि, सेठों की प्राईवेट लिमिटेड कंपनियाँ। हाँ इसमें कोई दो राय नहीं कि उस समय के अधिकाँश सेठों और लक्ष्मीपुत्रों ने तत्कालीन क्राँति के ध्वजवाहकों को, पार्श्व में रहकर, वंदनीव आर्थिक सहयोग दिया था, जिससे भारत भूमि स्वतंत्रता की ओर अग्रसर हो सकी/केसरिया स्वर को आशा है कि आज के कालखण्ड में भी कृपालु पाठको द्वारा 'केसरिया स्वर' की हर संभव सहायता प्रदान की जायेगी। इसकी विज्ञापन की नियमावली भी इसी अंक में दी जा रही है, हमारा प्रयास यही रहेगा कि, सच के संघर्ष में हम जन–गण–मन के साथ कंधे से कंधा मिलाते हुए खड़े रहें, अपनी अंतिम साँसों तक डटे रहें। हम 'स्वयमेंव मृग्रेन्द्रता' के आत्मबल के साथ, 'परित्राणाय साधूनाम विनाशय च दुष्कृताम' की भावना के साथ आगे बढ़ने को संकल्पित हैं। अंत में मैं अपनी ही गजल की दो पंक्तियों के माध्यम से अपनी बात को विराम दूँगा कि, "रावण" को मारने का जो शोक पालते हैं, वनवास पर निकल कर जंगल खँगालते हैं।"

शरद मिश्रा 'सिंधु', अधिवक्ता

बापू के प्रति श्रद्धांजलि

ारत मां का पूत तपस्वी यथा भगीरथ।
ाया स्वतंत्रता गंगा था ले चला शांति पथ।।
थ सदा अनुसरण सिखाया तुमने जन को ।
ातृ भाव से अपनाया तुमने हरिजन को।।
ाांति स्रोत को बहाकर, शांत किया जीवन समर।
इतिहास लोक आलोक में,आज हुआ बापू अमर ।।

श्याम सुंदर शर्मा

'मुक्तक'

मैं चलूंगा कदम दर कदम साथ में।
मातृ भू की ध्वजा नित लिए हाथ में।
भाग्य से दान देना पड़े शीश का,
तब चलूं बांध भगवा कफन माथ में।

केशरी प्रसाद शुक्ल

'विज्ञापन/सहयोग की दरें 'केसरिया स्वर'

पिछला पृष्ठ संपूर्ण – आजीवन रू0 बीस लाख
पिछला पृष्ठ संपूर्ण पांच वर्षो के लिए रू0 पाँच लाख
अंदर का एक पृष्ठ संपूर्ण – आजीवन रू0 दस लाख
अंदर का एक पृष्ठ संपूर्ण पांच वर्षो के लिए रू0 पाँच लाख
पिछला पृष्ठ संपूर्ण – एक अंक के लिए– रू0 एकलाख
अंदर का एक पृष्ठ संपूर्ण – एक अंक के लिए रू0 साठ हजार
नोट– छोटे आकार के विज्ञापन उसी अनुपात में देय, प्रवेशांक, के प्रकाशन से दो माह तक विज्ञापन दरें उपरोक्त रहेंगी, उसके बाद, दरों में बढ़ोत्तरी संभाव्य है।
दान या सहयोग हेतु खाता सं0 'दिनकर दर्शन चैरिटीबल ट्रस्ट'
खाता संख्या–536602010549552, IFSC Code-UBIN0553662
यूनियन बैंक आफ इंडिया, राजाजीपुरम शाखा, लखनऊ, उ0प्र0

उद्धव ठाकरे विपक्ष के हाथ लगे, सुविधा संतुलन के मानक बने

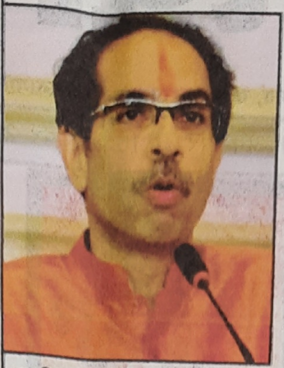

आधुनिक भारतीय राजनीति में जहाँ भगवा राजनीति भारतीय सनातनता की ध्वजवाहक बनकर अग्रसर है, तो विपक्ष जेहादी विचारधारा के समर्थक के रूप में मीडिया द्वारा स्थापित किया जा चुका है। हालाँकि जेहाद के धब्बे से बहुजन समाज पार्टी स्वयं को अलग रखने में समर्थ दिख रही है किन्तु उसका प्रसार विशेषतया हिन्दी भाषी क्षेत्रों में ही है, ऐसे में काँग्रेस अपनी पदयात्रा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता का जनमानस में भाव जगाने को प्रयासरत अवश्य है, मगर जेहादियों द्वारा पिछले दशकों से काश्मीर में की गई क्रूरताओ, गिरिजा किट्टू के ओम नमः शिवाय कहते हुए जिंदा आरा

मशीन पर काटने की जघन्य स्मृतियों, और केरल में चौराहे पर गाय के साथ की गई क्रूरता, जहाँ हिन्दू अल्पसंख्यक हो चुके हैं, वहां से हिन्दुओं के पलायन आदि जैसे पीड़ादाय संदर्भो को दरकिनार करने के लिए, भगवाधारी उद्धव ठाकरे विपक्ष के हाथ लगे ऐसे रत्न के रूप में स्थापित हो रहे हैं, जिससे विपक्ष स्वयं को हिन्दू विरोधी होने की छवि से अलग दिखने के लिए, दर्शित करने में समर्थ हो रहा है। वैसे भले ही बाला साहब ठाकरे के पुत्र विपक्ष के लिए संजीवनी बन कर उभर रहे हों, किन्तु विपक्ष के मुख्य रूप से काँग्रेस को जेहाद की अवधारणा का मुखर विरोध करना ही होगा, अन्यथा भारतीय राजनीति शिवाजी और राण प्रताप की केसरिया आभा का अनुगमन करने की ओर गतिमान तो हो ही चुकी है।

अभियान

चलो जन्मभूमि पे मंदिर बना लें।
चलो राम भक्तों अयोध्या चलें ।। ध्रुपद
राम मंदिर बनेगा उठा लें कसम।
रोक पाएगा कोई न बढ़ते कदम।
आज फिर से हुआ रावणी राज देखो,
चलो राम भक्तों मिटाने चलें।। चलो.....
राम नगरी में देखो असुर आन पहुँचे।
जनम भू पे करते उधम राम की।
राम भक्तों का संहार करते अधम,
चलो मिल के उनसे निपटने चलें।। चलो.
...
गये थे कभी राम का नाम रटते,
निहत्थे बजाते हुए कर से ताली ।
निहत्थों पे टूटी वो असुरों की सेना,
चलो शस्त्र से सब सुसज्जित चलें।। चलो.
वीर अनगिन अवध में शहीद हो गये हैं,
शहादत को अनगिन अभी भी अड़े हैं।
लिए तेग कर में, कफन बाँध सर में,
चलो पंज प्यारों के पथ पर चलें।। चलो.
.....
कहीं भी न है बाबरी– बाबरे हैं,
बहक कर बड़े बाबरे बड़बड़ाएँ ।
बहुत बात बढ़–बढ़ के करते है बक–बक,
चलो उनकी दुर्गति बनाने चलें।। चलो..

हरी प्रकाश अग्रवाल 'हरि'

उठो देश के वीर जवानों

उठो देश के वीर जवानों,
जागो अपनी आँखें खोलो।
आजादी का मूल्य चुकाने,
के हित बाहु–शक्ति को तौलो ।।
इस आजादी में कितने ही,
नव जवान बलिदान हो गये।
फाँसी के फन्दों पर चढ़कर,
भारत की पहचान हो गये ।।
माँ का कर्ज चुकाने के हित,
तुमको आगे आना होगा ।
सोते रहे अगर धोखे में,
तब पीछे पछताना होगा । ।
अभी समय है, चेतो–चेतो,
भारत अखण्ड हो ! उठो बढ़ो।
कहीं न भ्रष्टाचार दिखे अब,
तुम नये–नये प्रतिमान गढ़ो ।।

अनिल किशोर शुक्ल 'निडर'

होली पर्व

होली यों तौ होंति है–
यत्र–तत्र–सर्वत्र।
प्रीति भरी अँखियाँनु के रहें लुप्त नक्षत्र।।
लुप्त रहें नक्षत्र, मकस की गाँठि बढ़ रहीं।
ओछी, सँकरी गली नेह की राह अड़ि रहीं।।
बैरी इनमें छुपे, दिखें तेरे हमजोली।
करें ठिठोली– ऊपर तैं बस ! खेलें होली।।
करें ठिठोली–ऊपर ते बस ! खेलें होली।

देव किशोर शर्मा

समाज का सेवक, जो करता है बकबक

समाज का सेवक, जो करता है बकबक,
जो कहता है वो करता नहीं,
कथनी करनी में रखता है भेद,
इसीलिए हमें होता है खेद,
अपनी गली सड़ी जिंदगी से सद्भावना को उभारो,
पथ भ्रष्ट राज्य को सही दिशा से संवारो,
इसी में तेरा मेरा कल्याण है,
तभी देश का सही मायनों में होगा निर्माण है।

मंगल प्रसाद राठौर

सम्पादकीय मण्डल

प्रधान संपादकः शरद सिंह "शरद"
संपादकः शरद मिश्र 'सिंधु'
सह संपादक साहित्य–जितेन्द्र कुमार उपाध्याय 'अद्वैत जोगीया'
राजनैतिक विश्लेषक – भव्य प्रकाश शुक्ला
उप–सह संपादकगण – माधवेन्द्र नाथ मिश्रा, प्रशान्त त्रिपाठी, के0डी0 मिश्रा
ब्यूरो प्रमुख उ0प्र0– जितेन्द्र कुमार सिंह
विधि सलाहकार – निलीश आनन्द अधिवक्ता
ब्यूरो प्रभारी हरदोई – हरि कुमार मिश्रा
ब्यूरो प्रभारी उ0प्र0–संजय मिश्र 'रजोल'
विधि संवाददाता उच्च न्यायालय खण्डपीठ लखनऊ– देवेन्द्र नाथ उपाध्याय
ब्यूरो प्रभारी लखनऊ– हरी प्रकाश 'हरि'
ब्यूरो प्रभारी बलरामपुर– शिखर दीप सिंह
ब्यूरो प्रभारी बाराबंकी–के0पी0 सिंह
ब्यूरो प्रभारी गोण्डा–आनन्द ठाकुर
साहित्य प्रतिनिधि–अरविन्द रस्तोगी, देवेश द्विवेदी, मंगल प्रसाद राठौर
लखनऊ जनपद न्यायालय विधि प्रतिनिधि– हरिनाथ तिवारी
विधि प्रतिनिधि राज्य ट्रिब्यूनल–विजय करण सिंह चौहान
संरक्षकगण– देव किशोर शर्मा , रमेश प्रसाद तिवारी
राज्य प्रतिनिधि–महाराष्ट्र–सात्यकी वर्मा
राज्य प्रतिनिधि–दिल्ली–छोटेलाल गुप्ता
राज्य प्रतिनिधि –पंजाब– शिव कुमार मिश्रा
किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा, सभी उत्तरदायित्व संपादक के होंगे।
सभी पद अवैतनिक
दिनकर दर्शन चैरिटेबल ट्रस्ट, विश्वभर में सर्वाधिकार सुरक्षित
किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित
केसरिया स्वर किसी भी प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता, रचनाकार/लेखक कृपया अपनी मूलप्रति सरक्षित रखें।

"वह बेचारी" (धारावाहिक)

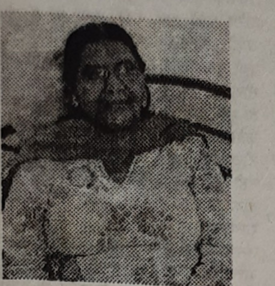

शरद सिंह "शरद"

1

कहां जाना है मां जी ? रिक्शे वाले ने बड़ी आत्मीयता से पूछा था । और वह उसे अपलक देखती रह गई । कुछ बोल न सकी, वह सोच ही रही थी कि उस रिक्शेवाले की आवाज फिर उसके कानों से टकराई उसकी ओर देखती वह बोली ,चौक चलोगे ?

जी मां जी बैठिये कहते हुए उस रिक्शेवाले ने हाथ का सहारा देकर उन भद्र महिला को रिक्शे पर बैठने में सहायता की ,और रिक्शे को आगे बढ़ा दिया

समय क्या से क्या बना देता है । वह अतीत में खोती चली गई ।

नीतू अपने घर की छत पर कपड़े सुखा रही थी ।भीगे कपड़ों की बाल्टी उसने नीचे रख दी और एक एक कपड़े को करीने से बंधी डोरी पर सूखने डालने लगी ।उसके घर के ठीक सामने एक आलीशान कोठी थी ।पोर्च में चार दृ पांच बड़ी बड़ी गाडियां खड़ी रहती ।

नीतू ने देखा कि एक और लम्बी सी गाडी उस कोठी के सामने आकर रुकी और उसमें से एक व्यक्ति जो सम्भवत: उस कोठी का मालिक ही होगा ने पैर बाहर निकाला । नीतू ने देखा उसके पैर में बहुमूल्य जूता था , विदेशी मूल्यवान कपड़े उसके शरीर पर सुशोभित थे । बहुत ही कीमती और स्टाइलिश चश्मा उसकी आंखों पर था ।नीतू को एक नजर में देखकर समझ आ गया था कि यह व्यक्ति बहुत ही घमंडी और स्वार्थी हैं । उस व्यक्ति ने चारों ओर नजरें दौड़ाई मानो वह अपनी अमीरी का रौब आसपास के लोगों पर डाल रहा हो ।उसकी नजरें नीतू की ओर भी उठीं और उसके छोटे से साधारण घर एवं कपड़ों को हिकारत भरी नजरों से देखता हुआ वह व्यक्ति कोठी में प्रवेश कर गया ।

नीतू अभी दो माह पहले ही इस शहर में आई थी ।उसके पति का स्थानांतरण तीन माह पहले इस शहर में हुआ था एक माह लग गया था उनको यह घर खोजने में ।छोटा सा साफ सुथरा उनके लिए पर्याप्त था । सबसे बडी बात यह थी कि वहां कोई शोर गुल नहीं था अत: वह लोग इस घर में आकर रहने लगे थे ।एक दो साल की बेटी आशु और पति नीरव बस इतना छोटा सा ही परिवार था नीतू का ।पति पत्नी दिखावा नहीं करते थे ।उनके पास लम्बी लम्बी गाडियां नहीं थी मकान भी किराये पर नीरव सरकारी कर्मचारी था ।वह प्रभावशाली व्यक्तितव का मालिक था ।अपने काम से काम रखता उसके पास इतना समय नहीं होता जो इस पास लोगों से मिले जब तब बाहर चला जाता आफिस के काम से शांत और शालीन परिवार था उसका सब का मान सम्मान करना परिवार को बखूबी आता था ।दो माह में ही नीतू आसपास बालों से हिल मिल गई थी । अक्सर ही उसके घर कोई न कोई आ जाता और वह आने वाले का पूरी तरह सत्कार करती आने बाला कुछ समय गप शप करके चला जाता ।कोठी बालों की बात कोई नहीं करता न ही कभी नीतू ने कुछ पूछा ही उस कोठी में कौन कौन है क्या करते हैं कोई नहीं जानता ।बस कोठी के मालिक देवनारायण ही कभी कभी दिखाई देते थे ।। हां कभी कभी पांच छ: साल का बच्चा बाहर आता उसके साथ एक व्यक्ति होता जो उसका बैग पकड़े होता और वह बच्चा जिस गाड़ी की ओर इशारा करता ,वह व्यक्ति उस गाड़ी में बैग रख देता और उस बच्चे के लिए गाडी का दरवाजा खोलता बच्चे के बैठने के बाद वह ड्राइविंग सीट पर आकर गाडी स्टार्ट कर उसे ले जाता । वह कहां जाता है कब आता है यह कोई नहीं जानता ।हो सकता पढने जाता हो । नीतू अभी कपड़े सूखने डाल रही थी कि वह बच्चा बाहर आया साथ के व्यक्ति के हाथ में बैग था व्यक्ति ने बैग गाड़ी में रखा बच्चे को बैठाया और चला गया । बच्चे ने नीतू की ओर देखा और हल्के से मुस्कराया ।तब तक गाड़ी निकल गई नीतू एक झलक ही देख पाई थी ।बच्चा नीतू को प्यारा लगा नीतू कपड़े डालकर नीचे आ गई । वह काम में लग गयी ।काम करते हुए भी वह उस कोठी के विषय में ही सोच रही थी । कैसे लोग है यह किसी से कोई बात ही नहीं करते घर में कोई है भी या नहीं नीतू ने सोचा एक बार एक महिला को देखा था नीतू ने । एक वृद्ध भद्र महिला को कोठी से बाहर आते देखा था ।वह सफेद साड़ी और सफेद ब्लाउज में थीं, लेकिन उनकी साड़ी बहुत कीमती जान पड़ रही थी बार्डर सुनहरा । आंखों पर नजर का कीमती चश्मा सुनहरे फ्रेम का ।चेहरा रौबीला और गर्व के मद से चूर ।और कोई महिला घर में है भी या नहीं कोई नहीं जानता वह तो अभी आई थी जो लोग पहले से रह रहे थे वह भी नहीं जानते थे।नीतू ने अपने सिर को हल्का सा झटका दिया , सोचा होगा कुछ हमें क्या करना और वह रसोई में जाकर खाना बनाने लगी इतने में डोर बैल बजी नीतू ने दरवाजा खोला सामने उसी की हम उम्र एक महिला खड़ी थी ।कहिए नीतू ने उसे प्रश्न सूचक निगाहों से देखा,जी मैं अनु पांडे पास ही रहती हूं , आप अभी अभी यहां आई हैं सोचा आपसे मिल लूं । जी आइए आइए नीतू ने सम्मानपूर्वक उनको लाकर अपने छोटे से परंतु सुव्यबस्थित ड्रांइग रूम में बिठाया । नीतू भी बैठ गई थी दोनों में बातें होने लगी । कुछ देर बैठ कर अनु चली गई ।और नीतू पुनरू अपने काम में व्यस्त हो गई ।

(2)

कुछ समय में ही नीतू का परिचय आस पास के सभी लोगों से हो गया ।सब एक दूसरे से मिलते गपशप करते और अपना खाली समय मिलकर व्यतीत करते।जब गपशप होती उसका मुख्य विषय होता सामने बाली कोठी ।सब यही कहते कि सामने कोठी है वहां कौन कौन है एक तो वृद्ध महिला है जो कभी महीने दो महीने में आते जाते दिख जाती हैं उनके अतिरिक्त जो व्यक्ति आता जाता है उसकी पत्नी तो हम लोगों के उम्र की ही होगी लेकिन कभी नहीं देखा ,है भी या नहीं दूसरी महिला बोली । या हो ही ना यह भी तो हो सकता है तीसरी महिला ने अपनी बात रखी । कुछ भी हो सकता है नीतू बात को मोड़ने के उद्देश्य से बोली आज मैंने कुछ नाश्ता बनाया है चाय नाश्ता हो जाये कुछ ,कहकर नीतू चाय बनाने चली गई ।जब नीतू आई तो उनके बीच कोई और बात चल रही थी कोठी प्रकरण बंद हो गया था । चलो अच्छा रहा वह बातें बंद हो गई नीतू ने सोचा ,नीतू कोठी प्रकरण में अधिक नहीं फसना चाहती थी वह । क्या लेना देना हमें ,उनका अपना रहन सहन है ।फिर भी जब नीतू एकांत में होती तो उसके मन में अवश्य आता कि आखिर इस कोठी का रहस्य क्या है ,कोई व्यक्ति चाहे जितना पैसे बाला हो ,घमंडी हो,फिर भी घर में कोई सदस्य तो ऐसा होता है जो सबसे मिलना जुलना चाहता है । परंतु यहां तो कोई ऐसा दिखाई नहीं देता ,जो किसी से मिले ,बात करे ।जाने कैसे हैं सभी लोग ।फिर स्वयं से कहती मुझे क्या उनकी अपनी मर्जी कोई इसमें हस्तक्षेप करने बाला कौन होता है । नीतू खाना खाने के बाद बच्चे को सुला रही थी ,उसके साथ ही वह भी लेट गई । थोड़ा आराम कर लूं उसने सोचा ।बच्चे को सुलाते हुए उसकी भी आंख लग गई ।अभी मुश्किल से दस मिनट ही हुए थे उसको सोए कि डोरवैल बजी उसकी आवाज से नीतू की आंख खुल गई । इस समय कौन हो सकता है कहीं पति तो नहीं है ,पर इस समय? नीतू सोचती हुई गेट पर गयी उसने थोड़ा गेट खोला बोली कौन ? गेट पर चादर में स्वयं को लगभग पूरा ढके एक आकृति खड़ी थी । कौन है आप ,और क्या चाहते हैं नीतू ने कुछ डरते हुए पूछा ।कौन हो सकता है यह ,कहीं कोई चोर डाकू तो नहीं है ? किसी गैंग के साथ हो ,क्षण भर में उसके दिमाग में शंकाएं सिर उठा बैठी वह गेट बंद करने लगी कि उस आकृति की आबाज आई । मुझे अंदर ले लो. जल्दी से मैं सब बताती हूं। वह आबाज किसी महिला की थी बहुत ही डरी हुई और दयनीय आबाज थी उसकी । नीतू सोच में पड़ गई इतने में वह महिला फिर बोली जल्दी मुझे अंदर कर लो वह लोग देख लेंगे तो फिर पकड़ लेंगे । नीतू ने और अधिक न सोचते हुए उस महिला को अंदर बुला लिया ,वह महिला अंदर आ गई । बरामदे में एक कुर्सी पर बिठा कर नीतू दूसरी कुर्सी पर बैठ गई।बैठने के बाद उसने अपने ढके चेहरे से कपड़ा हटाया वह बहुत ही कमजोर लग रही थी चेहरे पर काले काले बड़े–बड़े निशान थे कुछ ताजे भी थे ।ऐसा लग रहा था जैसे उसे यातना दी जाती हो चेहरा किसी चीज से जलाया गया हो । कौन हैं आप ? किसके चंगुल में फंसी है ,किसी के द्वारा अपहृत की गई है ? यहां किस प्रकार आई है घर कहां है ? ऐसे बहुत से सबाल नीतू ने एक साथ उससे पूछ डाले । वह अपनी पीड़ा को छुपाते हुए बोली , क्या पानी मिलेगा गला सूख रहा है । हां ,कहकर नीतू ने उसे पानी दिया महिला एक सांस में दो गिलास पानी पी गई ऐसा लगा न जाने कब की प्यासी है लेकिन अब वह कुछ शांत दिखाई दे रही थी पर उसके चेहरे पर पीड़ा और डर साफ नजर आ रहे थे । नीतू ने उसके कंधे पर हाथ रखा महिला दर्द से कराह उठी शायद उसका पूरा शरीर ही जख्मी था ।नीतू ने अपना हाथ पीछे कर लिया ।

++++++

उस महिला ने धीरे–धीरे बोलना शुरू किया ,मैं आपके सामने बाली कोठी से किसी प्रकार निकल कर आई हूं मैं वहीं कैद थी ।उसकी बात सुन नीतू चौंक गई कैद? नीतू के मुंह से अनायास ही निकला । जी मुझे वहां कैद करके रखा गया है अगर मैं कुछ कहूं तो मुझे बुरी तरह मारा जाता है । ऐसा क्यों पूरी बात बताओ ,नीतू बोली कौन हो तुम ? कैद करके क्यो रखा गया , यातनाएं क्यो दी जाती हैं ,क्या कारण है ? महिला ने गहरी सांस ली फिर बोली कारण ? हां कारण है बहुत बड़ा कारण, मैं उस घर की बहू हूं जबरन बनाई गई बहू । देव नारायण की जबरन बनाई गई पत्नी ।और फिर उसने अपनी कहानी बतानी शुरू की जिसे सुनकर नीतू सकते में आ गई ।

++++++

आज दसवी का परिणाम निकला था ,परीक्षाफल स्कूल के नोटिस बोर्ड पर लगाया गया था ।सभी छात्र छात्राएं अपना अपना परीक्षाफल देखने की जल्दी में थे । कोई खुशी से उछल पड़ता कोई मायूस हो बाहर की ओर चल देता ।रश्मी भी अपना परीक्षाफल देखने आई थी,उसे कोई उतावली नहीं थी वह पूरी तरह आश्वस्त थी कि वह पास हो जायेगी। धीरे–धीरे सभी बापिस होने लगे थे कुछ झुंड बनाकर एक ओर खड़े थे और तेज तेज आवाज में बातें कर रहे थे कोई पार्टी की बात कर रहा था तो कोई पिकनिक की । रश्मि ने अपना परीक्षाफल देखा उसका नाम सबसे ऊपर था ,जिसे देखकर वह खुश तो हो गरी लेकिन और छात्र छात्राओं की भांति उछली नहीं वह बोर्ड के पास से हटीं और चलने को हुई उसके पीछे बहुत सारे लोग खड़े हुए थे जिनमें लड़के भी थे और लड़कियां भी ।कैसा रहा रश्मि तनुजा बोली ?

अरे यह नहीं यह पूछ पार्टी कब दे रही है परीक्षाफल तो हम सभी को पता है सबसे ऊपर नाम है रोहित हँसता हुआ बोला ।उसकी बात सुन सब बोल उठे हां हां पार्टी कब दे रही हो रश्मि ?

जब कहो आज के बाद रश्मि बोली ।

आज क्यों नहीं मीता बोली । आज मम्मी पापा के साथ जाना है ,वह प्रतीक्षा कर रहे होंगे । रश्मि ने ज़बाब दिया । ठीक है हम लोग कल मिलते हैं , रोहित बोला ।और सब अपने–अपने घर चले गए । रश्मि घर आई तो उसके मम्मी पापा उसी की प्रतीक्षा कर रहे थे ।रश्मि ने आते ही अपना परीक्षाफल बताया तो वे लोग बहुत खुश हुए और सहसा ही बाहर जाने का प्रोग्राम बना लिया । रश्मि अपने मम्मी पापा के साथ गई उसके पापा ने रश्मि को बहुत सारे गिफ्ट खरीद कर दिए ।सबने मूवी देखी और बाहर ही खा पीकर घर आ गये ।रात का अंधेरा शुरू हो गया था । रश्मि के पिता शहर के जाने–माने व्यवसायी थे ।शहर में उनका बहुत नाम था वह अपनी बेटी को बहुत प्यार करते थे वह सोचते थे कि उनके बाद सारा कारोबार रश्मि सम्भालेगी ।वह चाहते थे रश्मि अपनी पढाई पूरी कर लें और कारोबार में हाथ बंटाने लगे । रश्मि पढ़ने में बहुत तेज थी हमेशा अपने क्लास में टॉप पर रहती थी । रोहित उसी के साथ पढ़ता था ।वह भी पढ़ने में बहुत तेज था । दोनो ही बहुत अच्छे मित्र थे । वह रश्मि के घर आता जाता रहता ।रश्मि भी कभी कभी जाती थी । रोहित के म्मी पापा भी बहुत अच्छे स्वभाव के थे ।रश्मि को अपनी बेटी ही मानते थे ।यह सच था कि उनके पास इतनी सम्पन्नता नहीं थी जितनी रश्मिके पिता नीलकांत के पास थी किन्तु प्यार स्नेह सम्मान की दौलत से वह कहीं अधिक सम्पन्न थे ।बेटा रोहित बुद्धिमान और संस्कारी था । नीलकांत और उनकी पत्नी रोहित के परिवार से भलीभांति परिचित थे और रोहित को बेटे की भांति ही स्नेह देते थे । कुछ समय से ऐसा हो गया था कि जिस दिन रश्मि रोहित से नहीं मिल पाती उसे अजीब सी बेचौनी होती ।न जाने क्यों होता था ऐसा । रोहित अधिकतर रश्मि के साथ रहता आज भी वह रश्मि और अपने परीक्षाफल को साथ ही सेलिब्रेट करना चाहता था । रश्मि भी ऐसा ही चाहती थी किन्तु वह अपने घर जल्दी बापिस आने का कहकर आई थी अत: वह रुकी नहीं थी ।घर आ गयी मम्मी पापा के साथ बाहर भी गयी और पूरे समय में रोहित उससे अलग नहीं रहा ।अब भी वह उसी के विषय में सोच रही है ।कल भी पापा ने पिकनिक का प्रोग्राम बनाया था अगले दिन एक पार्टी रखी थी । पार्टी में तो रोहित होगा ही पिकनिक के लिए भी उसको बुला लेते हैं सोचते ही रश्मि ने मोबाइल उठाया और रोहित का नम्बर डायल कर दिया ।

रात के दस बजे थे रोहित का मोबाइल बज उठा ।इस समय किसका फोन है ,जरूर रश्मि ही होगी ।

रोहित ने फोन उठाया ,वह रश्मि ही थी ।

रोहित कल पिकनिक चलते हैं मम्मी पापा ने पहले ही प्रोग्राम बनाया था जैसा कि वह परीक्षाफल आने के पहले ही हमेशा से करते हैं। तुम सुबह ही आ जाना ,अंकिल जी आंटी जी को भी साथ ले लेंगे सब चलते हैं रश्मि बोली । मम्मी पापा तो शायद नहीं आयेंगे मैं आ जाऊंगा रोहित बोला । नहीं वह भी साथ होंगे तो अच्छा लगेगा रश्मि बोली । ठीक है कहूंगा चलेंगे तो ठीक है रोहित बोला । वह दोनों कुछ देर बातें करते रहे फिर मोबाइल रख सो गये। सुबह आठ बजे रोहित आ गया ।उसके मम्मी पापा जाने को तैयार हो गये थे उनको जाते समय साथ लेना था । अत: घर से सब निकल पड़े बीच में रोहित के मम्मी पापा को साथ लें पिकनिक स्पाट पर चल दिये । लगभग एक घंटा चलने के बाद वे सब उस स्थान पर आ गये जहां पिकनिक का प्रोग्राम सबने बनाया था । उस स्थान को देख कर रश्मि बहुत खुश थी ।आज यहां पहली बार पिकनिक पर आये थे । रश्मि और रोहित उस स्थान के सौंदर्य में मानों खो गये । दूर तक फैली हरी हरी मखमली घास मानों धरती ने हरित बिछौना बिछा रखा हो स्थान स्थान पर हरी घास में छोटे–छोटे पीले पीले फूल अपनी अलग ही छटा बिखेर रहे थे । कहीं ऊँचे उँचे वृक्ष अम्बर से बातों में व्यस्त दिखाई दे रहे थे और लताऐं उनसे लिपट कर अपना प्रेम प्रदर्शन कर रही थीं छोटे छोटे वृक्ष अपनी ही मस्ती में झूम रहे थे ।दृश्य की मोहकता में रोहित और रश्मि दोनों ही खोए हुए थे । अरे रश्मि वह देखो उधर कोई नदी है उसके किनारे किनारे कितने पक्षी बैठे हैं चलो उधर चलकर फोटो खींचते हैं रोहित बोला । रोहित ने जिधर उंगली से इशारा किया उधर का दृश्य बाकई बहुत सुंदर था । वहां की फोटो बहुत अच्छी आयेंगी रश्मि बोली चलो उधर चलते है ,रश्मि बोली ।दोनों उधर बढ़े ही थे कि नीलकांत ने कहा रश्मि जल्दी आ जाना फिर हम सब खाना खायेंगे । जी पापा कहती हुई रश्मि रोहित के साथ उस दिशा में बढ़ गई । रश्मि नदी किनारे का दृश्य देख कर मंत्रमुग्ध हो गयी । पक्षियों का झुंड किलोलें कर रहा था उनकी मधुर ध्वनि कर्णप्रिय लग रही थी आस पास वृक्ष हवा की सरसराहट के साथ करतल ध्वनि कर रहे थे । पक्षी उड़ते और फिर उसी स्थान पर बैठ जाते ।ऐसा लगता कि वे जाना तो चाहते हैं पर उस स्थान का मोह उन्हें जाने नहीं देता और वे पुन: बैठ जाते हैं ।रश्मि दृश्यावलोकन में खो गयी थी और रोहित उस दृश्य को अपने मोबाइल के कैमरे में कैद कर रहा था । काफी समय तक दोनो वहां रहे फिर रश्मि बोली ,चलो रोहित अब चलते है पापा ने जल्दी आने को कहा था । हां रश्मि चलो अब चलते हैं कहकर रोहित रश्मि के साथ चल दिया । चलते चलते भी रोहित सुंदर दृश्यों को कैमरे में कैद करता था रहा था रश्मि और रोहित के मम्मी पापा उन दोनों की प्रतीक्षा कर रहे थे । आ गये तुम लोग ? चलो आओ अब कुछ खा लो कहते हुए रश्मि की मां खाना निकालने लगी ।सबने खाना खाया ।खाने के बाद रश्मि और रोहित फिर एक ओर चल दिए ।मम्मी पापा लोग आपस में गपशप में मशगूल हो गयें । धीरे–धीरे शाम होने लगी थी । अब चलना चाहिए नीलकांत जी बोले । हां अब शाम हो रही है जल्दी अंधेरा हो जायेगा चलना चाहिए रोहित के पिता रमाशकर ने उनकी बात का समर्थन किया । हा चलो लेकिन यह दोनों बच्चे कहा हैं ? अभी तक नहीं आये नीरा (रश्मि की मां) बोली । लो वह लोग भी आ गये ,मीरा (रोहित की मां) उस दिशा में देखती हुई बोली जिधर से रोहित और रश्मि आ रहे तू । सबने मिलकर सामान समटा और रोहित रश्मि ने गाडी में रख दिया ।सामान रखने के बाद गाडी में बैठने ही जा रहे थे कि एक नौजवान थका सा वहा आया बोला करता आप लोग मुझे आगे तक छोड देंगे ? मेरी गाडी खराब हो गई है ,कोई मैकेनिक भी अभी नहीं आया है फोन तो किया है लेकिन अभी आ नहीं पाया ।रात हो रही है ।मेरी तबियत ठीक नहीं है ।आप मुझे आगे छोड़ दें फिर मैं कोई सफारी मिल जायेगी उससे चला जाऊंगा गाडी मैकेनिक आकर ले जायेगा ।युवक ने बगैर रुके अपनी बात पूरी की । ठीक है चलो मैं छोड़ देता हूं , नीलकांत जी बोले । गाड़ी बड़ी थी तो बैठने में कोई ऐसी परेशानी नहीं हुई वह युवक गाड़ी में पीछे बैठ गया और नीलकांत जी ने गाड़ी स्टार्ट कर दी । कुदूरी तय करने के बाद जहा से वाहनों का आवागमन हो रहा था युवक बोला बस यहीं छोड़ दीजिए यहा से कुछ मिल जायेगा और मैं चला जाऊंगा । युवक बोला । नहीं नहीं तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है ,चलो तुम घर चलो सुबह चले जाना नीलकांत जी बोले ।वह नहीं समझे थे कि वह अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी गलती कर रहे हैं । दो तीन बार कहने के बाद वह युवक उनके साथ चलने को तैयार हो गया । रोहित और उसके मम्मी पापा को उनके घर छोड़ कर वह अपने घर आ गये । रोहित उनके साथ ही आ गया था । रोहित को गेस्ट रूम में ठहराकर वह सब सोने की तैयारी करने लगे । नीलकांत जी कमर में जाते ही सोने लगे वह सारे दिन की कार्य विधि से स्वयं को थका हुआ महसूस कर रहे थे उनकी पत्नी भी कमरे में जा चुकी थी । रश्मि ने रोहित को फोन किया ,जैसे ही रोहित ने हैलो बोला ,रश्मि बोली रोहित तुमसे जरूरी बात करनी है इसीलिए अभी फोन किया ,बैसे तुम भी सोने जा रहे होंगे । हां सोने तो जा रहा हूं लेकिन थका नहीं हूं ,बताओ क्या बात है रोहित बोला ।

रोहित यह जो युवक हम लोगों के साथ आया है यह मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा है ।पापा उसे घर ले आते है लेकिन न जाने क्यों कुछ अजीब सा लग रहा है कयो ,क्या हुआ ? रोहित बोला कोई बात हुई ,कुछ कहा उसने?

नहीं, कहा तो कुछ नहीं लेकिन उसका बात करना चारों ओर उसका देखना जैसे कुछ तलाश कर रहा है कुछ समझ नहीं आया ।

तुमने अकल को बताया ?

नहीं उनसे बात नहीं हुई वह सो गये हैं ।फिर मैं उनसे क्या कहूं ,वह अधिक जानते होंगे । हां यह तो है उन्होंने भी तो देखा ही होगा। कुछ नहीं होगा इसीलिए अकृ ने घर में ठहराया है । तुम ऐसे ही सोच रही हो ।सो जाओ तक गई होगी । चलो ठीक है पापा देखेंगे कहकर रश्मि ने मोबाइल बंद कर दिया और सोने की कोशिश करने लगी । परंतु उसे बार बार उस युवक का ध्यान आ जाता और वह सो नहीं पा रही थी । विचारों की उधेड़बुन में ही वह न जाने कब सो गई । सुबह जब रश्मि उठी तो सुबह के सात बज रहे थे । देव हां उसने अपना नाम देव ही बताया था ,जाने को तैयार था । नीलकांत का कहना था कि वह कुछ देर बाद चाय पानी के बात जाय । नहीं अभी मैं जाता हूं घर में सब परेशान होंगे अब जान पहिचान हो गई है आना जाना होता रहेगा फिर आकर नाश्ता भी करूंगा और यदि आपकी आज्ञा होगी तो खाना भी खा लगे देव हसा

शेष पृष्ठ 4 पर

पेज न0 03 का शेष

। हा हा क्यों नही नीलकांत जी बोले । टैक्सी जो देव ने बुक करा ली थी आ गई थी ।सबको नमस्ते कर रश्मि की ओर देखता हुआ वह टैक्सी में बैठ गया और चला गया । रश्मि पुन: विचारों में खोई गई । वह सोच रही थी कि जब उसे टैक्सी से जाना था तो कल ही क्यो नही चला गया । टैक्सी तो वह कही से भी बुक कर सकता था उसने उसकी गाड़ी में लिफ्ट क्यों ली ? क्या कारण हो सकता है ।क्या वह किसी प्लानिंग को अंजाम देना चाहता है ?

नाश्ते के समय रश्मि ने अपनी शंका अपने पापा के सामने भी रखी

पापा हँसते हुते अपनी पत्नी से बोले देखा हमारी हमारी बेटी अब बड़ी और समझदार हो गई है । लोगो को समझना उसे आ गया है ।तुम चिंता न करो बेटी मैं देख लूंगा कह कर नीलकांत जी ने बात का रुख मोड़ दिया । किंतु रश्मि को ऐसा अहसास हुआ जैसे उसके पिता और मां भी उस युवक के व्यक्तितव से बहुत प्रभावित है ।अभी दो दिन ही हुए थे कि वह युवक पुन: आ गया आते ही बोला मैं इधर से गुजर रहा था सोचा आप लोगों से मिलता जाऊं और एक बार फिर आभार व्यक्त कर दूं । आओ आओ ,बैठो ! नीलकांत जी ने उसका स्वागत किया । वह आफिस जाने को तैयार थे और नाश्तनाश्ता करने जा रहे थे उन्होंने उस युवक को भी अपने साथ ही बिठा लिया । नाश्ते की टेबिल पर सभी बैठे थे युवक बात नीलकांत जी से कर रहा था किन्तु वह छुपी दृष्टि से रश्मि को देख रहा था । रश्मि को कुछ अजीब लग रहा था उसका यू देखना ।अब रश्मि उस उम्र में पहुच रही थी जहा पहुच कर लड़किया किसी नजर को पहचानने में धोखा नही खाती है ।अब देव जब तब किसी न किसी बहाने आने लगा था , परन्तु रश्मि उसके आने पर न तो अधिक बात करती न ही वहां बैठती , देव भी उससे कोई खास बात नही करता बस औपचारिकता पूरी करता ।

धीरे-धीरे देश नीलकांत जी के विषय में बहुत कुछ जान और समझ गया ।

नीलकांत शहर के जाने-माने व्यवसायी थे । रेडीमेड कपड़ों का व्यवसाय वृहत रूप में चल रहा था । दूसरे शहरों में भी उनके शोरूम थे ।वह शहर के जाने-माने अमीरों में गिने जाते थे । देव का आना जाना बढ़ता जा रहा था ।अब उसने नीलकांत जी के व्यवसायिक मामलों में भी दखल देना शुरू कर दिया था । नीलकांत जी यह उसकी अच्छाई और कार्यकुशलता समझ खुश थे धीरे-धीरे चार साल निकल गये ।अब देव ने काफी कुछ काम को अपने कंधों पर ले लिया था ।उसने आफिस भी आना जाना शुरू कर दिया था और बहुत ही सूक्ष्मता से निरीक्षण में लगा था और अपनी कार्यकुशलता से अपना स्थान बना रहा था । नीलकांत जी उसके कार्य से खुश थे और अधिकतर कार्य उसे बताकर स्वय निश्चिंत हो जाते । रश्मि का स्नातक का अंतिम वर्ष था ।पढ़ने में रुचि के चलते वह हर परीक्षा में उच्च स्थान ही प्राप्त करती थी ।वह पढ़ लिख कर अपने पापा के व्यवसाय को ऊंचाई की बुलंदियों पर ले जाना चाहती थी ।यही कारण था कि वह इधर उधर ध्यान न देकर पढ़ाई में ध्यान देती थी । इसके चलते वह रोहित को भी अधिक समय नहीं दे पाती । लेकिन उससे बात किये बगैर रह भी नहीं पाती थी । न जाने कब इन दोनों के मध्य एक रिश्ता जन्म लेने लगा था । रश्मि हर बात रोहित से साझा करती । उसने देव की गतिविधियों को भी उसे बताया रश्मि जो बताती उसके अनुसार रोहित को भी शंका होने लगी थी ,उसने भी नीलकांत जी से कुछ कहने का प्रयास किया परन्तु नीलकांत जी ने उसकी भी बात को नजरंदाज कर दिया । उसके बाद रश्मि और रोहित ने अपनी तरह से पता लगाने का विचार किया । दोनों ने सोचा देव की सारी जानकारी वे दोनों निकालेंगे ।वह क्या चाहता है क्या कर रहा है ?

नीलकांत जी के शहर के बाहर के काम भी देश ही देख रहा था । नीलकांत जी तो एकदम निश्चिंत हो गये थे ।कालिज में परीक्षा की तैयारी के लिए छात्रों को छुट्टी दे दी गई थी ।सभी छात्र परीक्षा की तैयारी में जी जान जुट जाना चाहते थे । अत: सभी घर जाने की जल्दी में थे ।रश्मि और रोहित कालिज से निकल पास के ही एक पायलट में जाकर बैठ गये ।रश्मि के माथे पर चिंता की लकीरें स्पष्ट झलक रही थी ।वह खामोश थी ।क्या सोचने लगी रश्मि ? रोहित बोला । कुछ नहीं रोहित उसी देश के विषय में सोच रही थी । रश्मि बोली ।न जाने क्यों पापा कुछ नहीं देखा पा रहे है, वह उसके ऊपर आख बंद कर विश्वास करते हैं , किसी की कोई बात सुनने या समझने का प्रयास ही नहीं करते । जब हम लोग समझ रहे है तो वह क्यों नहीं समझ पा रहे ? न जाने क्या देखने का प्रयास वह कर रहे है ?

हां इस बात की चिंता तो है ऐसा लगता है कि हमको ही कुछ न कुछ करना होगा । चलो अभी छोड़ो परीक्षा देनी उसके बाद हम दोनों देखते है ।अभी इतना सोचोगी तो परीक्षा पर असर पड़ेगा । चलो अब चलते है तुम परेशान मत हो कुछ हल निकालेंगे । कहकर रोहित उठ खड़ा हुआ और रश्मि की ओर अपना हाथ बढ़ा दिया ।उसका हाथ पकड़ रश्मि उठ खड़ी हुई और मुस्करा दी । वह अभी पार्क से बाहर आये ही थे कि बारिश की जोरदार बूंदों ने उनका स्वागत किया ।और जब तक वह पुन: पार्क में जाते पूरी तरह भीग गये । दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा और मुस्करा दिए । रोहित अब भी रश्मि को देखे जा रहा था उसे अपनी ओर देखते पाकर रश्मि ने लजा कर अपनी नजरें नीचे झुका ली। बारिश बहुत तेज थी जो रुकने का नाम ही नही ले रही थी ।और पानी की बौछार वहां तक आ रही थी जहां वह दोनो थे बारिश तो रुक ही नहीं रही है यहां भी भीग रहे है ,इससे अच्छा चलो चलते है ,रश्मि बोली । हां चलो घर जाकर चेंज कर लो ।तुम सब भीग गई हो तबियत खराब हो जायेगी रोहित बोला । दोनों बरसते पानी में सड़क पर आ गये रश्मि ने अपनी स्कूटी स्टार्ट की ,पर यह क्या स्कूटी तो स्टार्ट ही नही हो रही है । रोहित की बाइक भी स्टार्ट नहीं हुई बारिश का पानी शायद इंजन में चला गया । रोहित बोला चलो पैदल ही जाना होगा। दोनों घर की ओर चल दिए ।तुम मेरे साथ घर चलो रश्मि बोली । काफी पीटर जाना जब बारिश भी रुक जायेगी ।चेंज भी कर लेना । ठीक है तुम्हें घर छोड़ कर तब जाऊंगा । दोनों घर आये । नीलकांत जी घर पर ही थे।अरे बारिश में क्यो आये तुम लोग भीगते हुए ? गाड़ी को बोल दिया होता ।चलो जल्दी चेंज कर लो । तबियत खराब हो जायेगी ।

जी पापा कहकर रश्मि बाथरूम की ओर बढ़ी उसने देखा देव भी आया हुआ था ।और वह रश्मि की ओर देख रहा था उसके देखने का ढग रश्मि को अच्छा नहीं लगा । वह जल्दी से बाथरूम मे चली गई । देव की निगाहें रोहित ने भी देखी थी और गुस्सा आ रहा था ,किंतु वह अभी कुछ बोल नही पाया ।।वह घूरती निगाहों से उसे देख रहा था कि नीलकांत जी ने उसे भी चेंज करने को कहा और रोहित दूसरे बाथरूम में चला गया । रश्मि और रोहित दोनों तैयार हो गये थे बारिश अभी भी हो रही थी । रश्मि अपने कमरे में चली गयी उसने गोपाल को काफी अपने कमरे में लाने को कहा । रोहित आकर टेबिल पर बैठ गया । नीलकांत जी उनकी पत्नी और देव भी वहीं बैठे थे । गोपाल चार काफी और कुछ नाश्ता टेबिल पर रख गया। रश्मि को दे दी काफी ? मां ने गोपाल से पूछा । जी दे दी मां जी कहकर वह अपने काम में लग गया । क्यों रश्मि जी यहां नहीं आई ? देव बोल पड़ा। नही वह कमरे में चली गयी कह रही थी मुझे आराम करना है । मा बोली । जी आंटी वह सिर दर्द बता रही थी ।रोहित बोला । देव ने उसे अजीब नजरों से देखा । लेकिन रोहित ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया । देव लगातार उसे घूर जा रहा था । कुछ देर बाद नीलकांत जी देव से बोले तो देव बाबू आप शीघ्रातिशीघ्र इस कार्य को समाप्त कर लें फिर आगे काम का विस्तार किया जाय जैसा हम लोगों ने विचार किया है । हा शीघ्र ही शुरू करते हैं हम समय पर सब काम कर लेंगे और नवदुर्गा में उस शोरूम का भी उदघाटन हो जायेगा, देव बोला । ठीक है मुझे तुम्हारा काम करने का ढग बहुत अच्छा लगता है , कहीं भी मुझे देखने की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती ।और सच में नीलकांत जी कोई भी काम नहीं देखते थे सब देव ही देखता था ।जो नीलकांत सारा सारा दिन घर में दिखाई नहीं देते थे हर दूसरे दिन जो काम के सिलसिले में शहर के बाहर होते वही नीलकांत जी अब अधिकतर घर में दिखाई देते ।सारा काम का भार देव के ऊपर डाल जैसे वह निश्चित हो गये थे। ठीक है फिर मैं चलता हूं कहते हुए देव बाहर निकललते हुए रोहित से बोला चलो रोहित तुम्हें भी छोड़ दूं? नहीं मैं चला जाऊंगा आप जायें , । रोहित उपेक्षा से बोला ।और देव उसको अजीब नज़रों से देखता हुआ बाहर निकल गया । रोहित कुछ समय तक वहीं बैठा रहा । फिर रश्मि को पुकारता हुआ उसके कमरे में आ गया । रोहित का इस घर में आना जाना बचपन से ही था वह घर के कोने कोने से भलीभांति परिचित था वह जहां चाहता वहां बेझिझक चला जाता । रश्मि के मम्मी पापा या कोई भी उसे बाहर का सदस्य नहीं मानते थे । रश्मि कमरे में अधलेटी किन्हीं विचारों में खोई थी ।उसने रोहित की आबादी नहीं सुनी न ही उसे रोहित के कमरे में आने का अहसास हुआ । कहां खोई हो रश्मि?

कहीं नही ,आओ कहते हुए रश्मि ठीक से बैठ गई । बैठो रोहित । क्या सोच रही हो ,देव के विषय में ? रोहित बैठते हुए बोला । हां रोहित ।तुमने देखा हम लोगों के आने पर उसने कैसी नजरों से हमें देखा था ?

यह सब पापा की समझ क्यो नही आ रहा, उसकी इच्छा क्या है ,व्यवसाय को पापा ने पूरी तरह से छोड़ रखा है ।जो वह चाह रहा है वह कर रहा है कितना पैसा आ रहा है कितना किसमें खर्चा हो रहा है किसी पर पापा ध्यान नहीं दे रहे एक तरह से यह मालिक बनता जा रहा है ।दूसरी ओर मुझे उसका इस तरह से देखना भी अजीब लगता है ।इस सब पर पापा का ध्यान क्यों नही जाता ? मां का भी इस ओर ध्यान नहीं जाता ,उनको तो समझना चाहिए ।वह पापा को भीकह सकती है ।पर वह भी कुछ नही कहती । आखिर ऐसा क्यों है ?रश्मि बोले जा रही थी । कुछ समझ नहीं आ रहा रश्मि! रोहित बोला कि यह सब क्या हो रहा है।अंकल आंटी को भी मैं कुछ नहीं कह सकता जब तक कोई सबूत हमारे पास न हो ।न जाने कितने प्रभावित हैं उस देश से ऐसा क्या किया है उसने । परीक्षा समाप्त हो जाते तो इसको देखा जाये पता तो लगा ही लेंगे ।बाद में सोचेंगे क्या करना है । वह दोनों बहुत देर तक बातें करते रहे ।चलो अब मैं चलता हू,बाइक और स्कूटी भी लानी है ।अब अभी मत सोचो ,परीक्षा के बाद देखेंगे कहकर रोहित उठ खड़ा हुआ ।रोहित तुम यहीं आ जाना साथ में पढ़ेंगे ,साथ साथ परीक्षा की तैयारी अच्छी होगी और साथ ही रहेंगे। यहां की सारी जानकारी भी रहेगी । रश्मि बोली । ठीक है रोहित बोला और कमरे से बाहर निकल गया । अरे रोहित ! तुम जा रहे हो ,खाना खा लो ,नीरा बोली । नहीं आंटी बाइक भी लानी है और रश्मि की स्कूटी भी वहीं है वह भी लानी है ।शाम को स्कूटी लेकर फिर आऊंगा परीक्षा की तैयारी भी करनी है ।हम दोनों साथ ही यहीं पढ़ेंगे मम्मी पापा को बता आयेंगे । ठीक है फिर शाम को चाय के समय तक आ जाना मम्मी पापा को भी ले आना बहुत समय से मिलना नहीं हो पाया ,नीरा बोली । ठीक है आंटी मैं ले आऊंगा । कहकर रोहित चला गया।

शाम को जब वह आया तो उसके मम्मी पापा भी उसके साथ थे । नीलकांत जी और नीरा उन्हें आया देख बहुत खुश हो गये । आओ आओ आज बहुत समय के बाद आना हुआ नीलकांत एवं नीरा ने उन दोनों का स्वागत किया और ड्राइंग हाल में उनके साथ ही सोफे पर बैठ गये । कुछ ही देर में गोपाल ने चाय नाश्ते की ट्रे उनके सामने रख दी ।सब बातें करते हुए चाय का आनंद ले रहे थे ।चाय समाप्त हुई ही थी कि देव आ गया।उसने रोहित और उसके मम्मी पापा को बैठे देखा तो वह बुरा सा मुंह बनाकर रह गया । आओ देव ! थोड़ी देर कर दी तुमने हम लोगों ने अभी चाय समाप्त की है ।चलो कोई बात नहीं तुम्हारे साथ एक बार और मिल जायेगी , नीलकांत जी ने हंसते हुए कहा । जी ! कहता हुआ रोहित सोफे पर बैठ गया । उसके बैठते ही रश्मि उठ खड़ी हुई और रोहित से बोली चलो रोहित ,स्टडी रूम मे चलते है। हां तुम लोग जाओ पढ़ो , नीलकांत जी बोले । और वह दोनों स्टडी रूम की ओर बढ़ गये। दोनों को देश की घूरती निगाहों का स्पष्ट अहसास हो रहा था और देव की निगाहें उनके कमरे में जाने तक उनका पीछा करती रहीं। रश्मि और रोहित स्टडी रूम में आकर पढ़ाई करने लगे ।उनका सोचना था कि परीक्षा के बाद ही अब आगे का सोचा जायेगा । कुछ देर के बाद देव बोला मुझे निकलना चाहिए सुबह कानपुर जाना है । नीलकांत जी ने उसे कानपुर का हिसाब किताब देखने को कहा था । ठीक है फिर तुम जाओ । नीलकांत जी देव से बोले ,और देव उठकर चला गया लेकिन जाते जाते भी उसकी निगाहें स्टडी रूम की ओर ही थी और वह कुछ और ही हिसाब किताब में लगा था ,जिसके विषय में कोई समझ नहीं पा रहा था । आज रोहित का अंतिम पेपर हो गया था । अत: आज वह निश्चित था किंतु रश्मि को पढ़ाई करनी उसका-कल एक पेपर और रह गया था । रश्मि के साथ बैठने के लिए और कुछ उसकी सहायता के उद्देश्य से रोहित पेपर के बाद सीधा यहीं आ गया था । रोहित जब आया देव पहले से ही वहां था । कैसा रहा पेपर रोहित ? देव उससे बोलने के बहाने रश्मि के पास जाने से रोकना चाह रहा था ।

ठीक रहा , रोहित ने संक्षिप्त उत्तर दिया । आज तो समाप्त हो गये पेपर ,अब तो खाली हो ,आगे का क्या सोचा वह फिर बोला अभी कुछ विचार नहीं किया । रोहित बोल कर उठने लगा । अरे बैठो ! कहां चल दिए अब पढ़ाई तो करनी नहीं है फिर? और देव ने वाक्य बीच में ही छोड़ दिया और मुस्करा कर देखा।हां मुझे नहीं किंतु रश्मि को करनी है और वह तब ठीक से पढ़ पाती है जब कोई उसके साथ हो ,कहकर रोहित रश्मि के कमरे की ओर बढ़ गया । और देव उसे जाते देखता रह गया ।

नीलकांत जी को उसने जब आते देखा तो उसने अपनी निगाहें स्टडी रूम से हटाकर उन पर केंद्रित कर दीं ।जब नीलकांत जी बैठ गये तो उसने आफिस और शोरूम की बातें शुरू कर दीं ।इतने में गोपाल ने बताया कि खाना लग गया है ।और दोनों बात वहीं बंद कर खाने की टेबिल पर आ बैठे। सहसा रदेव बोला आज तो रश्मि जी की परीक्षा समाप्त हो गई है ।नहीअभी कल की और यह गयी है आज रोहित की समाप्त हुई है । मां ने आते हुए कहा । नहीं मैंने अभी रोहित को आते देखा था ।देव बोला । हां वह तो आता रहता है रश्मि और रोहित बचपन से साथ ही रहते हैं पढ़ते हैं । मां बोली । तब तो आज रश्मि की पढ़ाई में व्यब्धान होगा रोहित तो उसी कमरे में गया है ।देव मानों रहस्य खोला हो। नहीं रोहित और रश्मि साथ रहकर ही पढ़ पाते हैं । इसीलिए वह पेपर देकर सीधा इधर ही आता है । मां बोली। फिर गोपाल से रोहित और रश्मि को भी खाना खाने को बुलाने को कहा और बैठ गई। गोपाल ने बापिस आकर बताया कि रश्मि और रोहित अभी खाना नही खायेंगे ।बाद में खायेंगे । ठीक है उनको जब वह कहें तब बना देना हम लोग खाते हैं । नीलकांत जी ने कहा । आज रश्मि के भी पेपर समाप्त हो गये थे ।वह खारिज से आने के बाद खाना खाकर सो गयी थी ।वह गहरी नींद में थी शाम के चार बज गये तो उसे समय का भान नहीं था ।देव किसी काम से बाहर गया था और अब आया था वह नीलकांत जी से बात कर रहा था ।वह बार बार रश्मि के कमरे की ओर देख लेता । आज तो रश्मि की परीक्षा समाप्त हो गई होगी ।घर में नहीं है क्या?

है सो गयी है दिन रात परिश्रम करते हैं यह बच्चे आज चैन की नींद सोती है मां ने आते हुए कहा वह उधर ही आ रही थी ।

अभी उठी नहीं रश्मि ? वह कहीं जाने को कह रही थी । नीलकांत जी बोले ।

हां अब उठेगी ,अभी तो सो ही रही है पांच बजने बाला है अब तो ।नीरा बोली।

नीरा ने अपनी बात समाप्त ही की थी कि रोहित आ गया ।लो रोहित आ गया अब वह भी उठने बाली होगी , नीरा बोली ।

तो क्या रोहित की प्रतीक्षा कर रही थी, देव ने व्यंग किया।

हां प्रतीक्षा ही समझो देव जी मैंने उसे बोला था पाच बजे तक आऊंगा। रोहित ने भी उसी तरह से जबाब दिया और नीलकांत जी,नीरा को अभिवादन कर एक सोफे पर बैठ गया।फिर रश्मि कमरे से बाहर आता देख बोला ,लो रश्मि भी उठ गई।

अच्छा इसीलिए अब आये हो सोचा होगा रश्मि तो दिखेंगी नहीं बैसे तुम्हें क्या फर्क पड़ता पहले आते तो रश्मि को उठा लेते , तुम्हें कोई रोक तो है नहीं ।देव ने कुटिल मुस्कान से कहा ।

क्या ? नीलकांत जी ने कहा आज उसकी बात उन्हें भी अच्छी नहीं लगी थी।

देव समझ गया कि नीलकांत जी को अच्छा नहीं लगा उसने जल्दी से बात को सभाला बोला रोहित का आना जाना तो बचपन से है एक तरह से यह उसका ही घर है । अपने घर में चाहे जो करो ,अपना तो अपना ही होता है ।

नीलकांत जी कुछ बोले नहीं लेकिन उनको देख कर लग रहा था कि उनको कुछ कुछ समझ आ रहा है ।

रोहित को अच्छा लगा यह और रश्मि यही तो चाहते थे कि वह देश की फितरत को समझें।

रश्मि हाथ मुंह धोकर गोपाल से चाय लाने को कहकर कमरे में जाने लगी कि नीलकांत जी ने उसे बुलाया और वह कमरे में न जाकर उनके पास आ गई और एक सोफे पर बैठ गई।

इस बार क्या किया जाये परीक्षाफल आने पर ? नीलकांत जी ने रश्मि से पूछा । पापा अभी तो उसमें समय है ,अभी तो मस्ती करनी है नो टेंशन ,कहकर वह मुस्करा दी ।उसके साथ सभी मुस्करा दिये

रश्मि चलो तुम्हें कहीं जाना था न चलिए आंटी । रोहित बोला

क्या तुम भी जा रही हो ? नीलकांत जी ने नीरा से पूछा ।

हा मुझे कुछ लाना है मार्केट से ,आपको तो कहीं नहीं जाना ?

नीरा बोली ।

नहीं मुझे नहीं जाना तुम लोग जाओ ।

ठीक है कहकर नीरा रश्मि और रोहित के साथ चली गई ।

उनके जाने के बाद देव नीलकांत जी से बोला ,एक बात कहूं सर?

हा हां पूछो ,क्या बात है ,कोई परेशानी है क्या?

नहीं नहीं ,ऐसा कुछ नहीं है ,देव बोला । मैं यह कह रहा था कि यह रोहित हर समय यहीं रहता है ,इसके घर में कोई नही है क्या ?

क्यो नहीं है रोहित के मम्मी-पापा से तो तुम मिले थे,

रोहित बहुत अच्छा बच्चा है । रश्मि का और उसका एक साथ एडमिशन हुआ था स्कूल में तब से दोनों साथ है । अब तक साथ ही पढ़ते और आते जाते हैं । नीलकांत जी बोले ।

जब एडमीशन हुआ तब बच्चे थे अब तो बड़े है ।अब भी आप बच्चे समझते हैं ।

मां बाप के लिए बच्चे हमेशा बच्चे ही होते हैं। नीलकांत जी उसकी बातों को हल्के ढग से ले रहे थे । उन्होंने उस बात को वहीं समाप्त कर कहा ,तो कल इंदौर जाना है न ? जाओ तैयारी कर लो ।

देव को नीलकांत जी का इस तरह बात टालना अच्छा नहीं लगा , लेकिन वह कुछ बोला नहीं ,उठकर बोला ठीक है सर , मैं चलता हूं ।कह कर चला गया देव ।

देव जा चुका था , नीलकांत जी बैठे कुछ कागज देख रहे थे । बैठे बैठे वह कुछ थकान महसूस करने लगे तो अपने कमरे में जाकर लेट गये । वह देव की कहीं बात को सोचने लगे ,उसने ऐसा क्यो बोला । फिर वह उस बात को दिमाग से झटक कर सोने का प्रयास करने लगे ।

अभी वह ठीक से सो नहीं पाये थे कि नीरा और रश्मि आ गये ,नीरा सीधे कमरे में गई और नीलकांत को सोता देख बोली यह क्या इस समय हो रहे हो तबियत तो ठीक है ? हां नीरा मैं ठीक हूं ,ऐसे ही लेट गया । नीलकांत जी ने कहा।

अब आप बहुत आलसी होते जा रहे हो जी सारा काम छोड़ रखा है , थोड़ा बाहर का भी देखो तो अच्छा है इस तरह किसी पर निर्भर होना ठीक नही होता ,मोटे हो जाओगे ,नीरा हंसकर कहा। इतने में रश्मि भी आ गई उसने नीरा की बात सुन ली थी,वह बोली हा पापा मम्मी बिल्कुल सही कह रही है ।आपने काम में ध्यान देना बंद कर दिया है ऐसे किसी पर विश्वास करके सब कुछ उसी पर छोड़ देना ठीक नहीं है ।न जाने कोई किस नियत से है ।वह बोली ।

और उसकी बात को सुन नीलकांत जी कुछ सोचने लगे ।आज पहली बार उनको लगा कि उनकी बेटी अब बड़ी और बहुत समझदार हो गई है ,वह जो कह रही है सच बात है । वह बोले तुम लोग शायद ठीक कह रहे हो हमें सारा काम देव को नहीं सौंपना चाहिए । अब हम स्वयं देखेंगे ।जब तक तुम और रोहित पढ़ाई पूरी करते हो हम देखते है फिर तुम दोनों देखना ।

हम दोनो ? रश्मि हकलाती सी बोली ।

हां रश्मि रोहित बहुत अच्छा लड़का है ।तुम क्या समझती हो हम तुम्हारे मन को नहीं समझते । नीलकांत जी मुस्कराते हुए बोले ,और रश्मि ने अपना सिर नीचे झुका लिया। रश्मि अपने कमरे में चली गई ।

रश्मि को नींद नहीं आ रही थी कभी वह देव का पर्दाफाश करने पर विचार करती कभी रोहित के विषय में सोचती ।इसी उधेड़बुन में दो बज गया ।दो बजे के बाद वह सो गई

रश्मि को घर छोड़ने के बाद रोहित अपने घर आ गया वह निरंतर देव के विषय में ही सोच रहा था । विचार कर रहा था कि उसके विषय में कैसे पता लगाया जाये ।फिर उसके दिमाग में विचार आया कि उसे आफिस से ही अपना काम शुरू करना चाहिए ।और इस विचार को कार्यान्वित करने के उद्देश्य से

शेष पेज 05 पर

पेज 04 का शेष

उसने रश्मि को फोन करना चाहा फिर उसने मोबाइल रख दिया स्वय से ही बोला नही,सुबह जाकर ही बात करेंगे अभी फोन करना ठीक नही है । और रोहित सो गया ।
सुबह जब रोहित रश्मि के यहा पहुचा तो रश्मि सो रही थी ।
सात बज रहा है रश्मि अभी उठी नहीं चलना नही है क्या , रोहित बोलता हुआ कमरे में गया और उसकी आवाज सुन रश्मि हड़बड़ा कर उठ गई ।
चलो जल्दी देर हो जायेगी, रोहित बोला ।
हा चलते है ,कहकर रश्मि तैयार होने चली गई और जल्दी से तैयार होकर बोली चलो रोहित ।
अरे कुछ खा तो लो पहले ,इतनी जल्दी क्या है , कहा जाना है? रीना बोली ।
नही मां देर हो गई है कहते हुए दोनो चले गये ।
अब तो परीक्षा भी समाप्त हो गई अब ऐसा क्या है जो ऐसे ही चले आते दोनो ,नीरा बड़बड़ाई ।
अरे कुछ काम होगा बच्चे बड़े हो गये है ।तुम इतना परेशान क्यो होती हो अब वह समझदार हैं । नीलकांत जी बोले।
मां चुप हो गई ।
रश्मि और रोहित दोनों आफिस में पहुंचे उनको देख कर्मचारी आश्चर्य मे पड़ गये ।एक दूसरे से बोला देव बाबू तो कह रहे थे कि साहब या रश्मि बिटिया अब आफिस कभी नहीं आयेंगे ,वह घर रहकर ही देखेंगे तो ३ और उसने बात अधूरी छोड़ दी
अरे हमें क्या ,बड़े लोग हैं ,कभी कुछ कभी कुछ ।दूसरा बोला
रश्मि और रोहित सीधे नीलकांत जी के आफिस मे आ गये और आते ही मैनेजर को बुलाया मैनेजर के आने पर दोनों ने अभिवादन कर उनसे एकाउंटेंट से एकाउंट बुक मंगबाने को कहा और मैनेजर ने एकाउंटेंट को बुला भेजा वह रजिस्टर लेकर आ गया ।बोला देव बाबू तो रोज देखते है ।
हां मुझे पता है लेकिन अब हम भी आया करेंगे ,हम लोगों को भी तो सीखना है , यहा देखना है ।
रोहित और रश्मि ने एक एक रजिस्टर उठा लिया और ध्यान से देखने लगे ।सहसा रोहित बोला रश्मि यह देखो ,यह तीन करोड़ रुपये कब निकाले गये कोई और शोरूम खोला गया है क्या , तुम्हें पता है ? रोहित बोला ।
नहीं मेरी जानकारी में तो नही है पापा ने कभी बताया नहीं।
रश्मि बोली ।
यह तो अभी एक माह पहले ही लिया गया है ,याद करो शायद कोई बात हुई हो । रोहित बोला।
नहीं कोई बात नही हुई । रश्मि ने ज़बाब दिया।
अब रोहित ने एकाउंटेंट से पूछा कि रुपये किस लिए निकाले गये ? उसने बताया देब बाबू ने निकाले थे वह कह रहे थे कि साहब ने मंगाये है किसी काम के लिये।।
और एक बात कहूं बिटिया ? हां काका कहो । रश्मि बोली।
एकाउंटेंट धीमी आवाज में बोला ,देव बाबू फर्जी सामान दिखाकर पैसे निकाल लेते हैं ,वह सामान कभी आता नहीं ।यह रजिस्टर मंगाकर चार चार पांच पांच घंटे बैठे कुछ करते रहते हैं मुझे जाने को कह देते हैं मैंने बाहर से देखा है वह कागज पर कुछ नोट करते है और कागज को जेब में रख चले जाते हैं एक बार उन्होने हमें बाहर देख लिया और हमें बुलाकर बहुत फटकारा धमकी दी कि अगर मेरे कामों मे दखल देगा तो नौकरी से निकाल दिया जायेगा ।देव बाबू ने मैनेजर साहब को भी धमकी दी है कि नौकरी से निकाल दिया जायेगा क्योंकि उन्होंने पूछा था कि आप रोज क्या करते हैं रजिस्टर में ? तो वह बोले थे अपने काम से काम रखो ।
रोहित ने रश्मि की ओर देखा और आंखों ही आंखों में कहा हम सभी है और रश्मि ने सहमति में सिर हिला दिया । ठीक है यह रजिस्टर हम लेकर जा रहे है,यदि देव पूछे तो यह मत बताना कि हम ले गये हैं कह देना आप ही ले गये थे ।न ही यह बताना कि हमने यहा आकर कुछ देखा है , ठीक है ?
ठीक है लेकिन यदि उन्होंने कुछ कहा या धमकी दी तो?
धमकी की चिंता मत करो हम आपको नौकरी से हटाने नहीं देंगे ।जैसा हम कहें बैसा करते रहिए । एकाउंटेंट ने सहमति में सिर हिला दिया लेकिन वह थोड़ा डर भी रहे थे ।
रजिस्टर लेकर रश्मि और रोहित आफिस से बाहर आ गये ।
अब बताओ लखनऊ आज ही चलें या कल सुबह का रखें ? बापिस आते रात हो जायेगी । रोहित बोला ।
आज रहने दो कल सुबह चलते हैं पूरा दिन मिल जायेगा । रश्मि बोली ।
फिर ? घर चलें? या चलो कहीं आराम से बैठ कर कल की प्लानिंग करते हैं, रोहित बोला । और रोहित ने गाड़ी स्टार्ट कर दी ।
हम कहां जा रहे हैं रश्मि बोली ।
यार परीक्षा समाप्त हो गई , कुछ अपने लिए भी समय ले लेते हैं , रोहित हंसा । वह देख रहा था कि रश्मि चिंतित है और वह उसे सामान्य करना चाहता था ।
उसने गाड़ी शहर से बाहर मोड़ दी और लगभग पैंतालीस मिनट के बाद उसने गाडी रोककर रश्मि से नीचे आने को कहा ।
यह स्थान बहुत सुंदर था पास ही कल कल करती गंगा नदी बह रही थी किनारे किनारे हरे भरे तरुओ की कतारें अपनी छटा बिखेर रही थीं । वहां की छटा देखकर रश्मि खुश हो गई उसका चिंतित चेहरा खिल उठा ।
दोनों नदी के किनारे किनारे चलते उस स्थान पर पहुच गये जहा इस पास कोई नही था बस वृक्षों की डालियों पर पक्षियों का कलरव सुनाई दे रहा था।दूर तक फैली झाड़ियों की हरियाली मुदित कर रही थी ।
आसमान पर छिटपुट बादलों की आवाजाही चल रही थी ,वृक्ष पर बैठे पक्षी कुछ कुछ समय के बाद गगन में अठखेलियां कर फिर वृक्ष पर आ बैठते ।
रश्मि उस दृश्य में खोई हुई थी रोहित उसे अपलक निहार रहा था ।सहसा उसने रश्मि के कंधे पर हाथ रखा वह चौंक गयी । कहां खोई हो रश्मि ? रोहित बोला।
कितना सुन्दर दृश्य है रोहित ,रश्मि बोली।
हां बहुत सुंदर बिल्कुल तुम्हारी तरह ।कहकर रोहित मुस्कराया ।
रश्मि ने अपनी नजरें नीचे झुका लीं ।
रोहित उसे देखता रह गया अधखुली पलकों से नीचे की ओर देखती रजाई सी शरमाई सी रश्मि रोहित को बहुत अच्छी लग रही थी बैसे आज वह बहुत प्यारी लग रही थी । रोहित उसे बचपन से देखता आ रहा है पर कभी ध्यान नहीं किया कि वह इतनी सुन्दर है । हल्के नीले रंग के सूट में स्वचछ धवल चेहरा , मानो नीलाकाश में चंद्रमा अपनी पूरी छटा बिखेर रहा हो ।
रश्मि ने अपनी नजरें ऊपर उठाईं रोहित को अपनी ही ओर देखता पाकर वह बोली ऐसे क्या देख रहे हो रोहित ?
तुम बहुत सुंदर हो रश्मि ,।
अभी तक नहीं देखा था क्या ?
देखा था लेकिन ऐसे नहीं देखा कभी ध्यान ही नहीं किया ।
फिर आज ? रश्मि ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी । आज ,आज कुछ अलग ही है या कहें लग रहा है जैसे आज पहली बार तुम्हें देखा है , रोहित मुस्कराया । रश्मि ने बगैर कुछ बोले फिर अपनी नजरें झुका लीं । मेरी ओर देखो रश्मि । रोहित बोला ।
रश्मि ने उसकी ओर देखा आज न जाने क्यों उसको रोहित कुछ अलग ही लग रहा था ,उसकी आंखों में कुछ और ही दिखाई दे रहा था ।
रोहित ने रश्मि का चेहरा ऊपर उठा उसकी आखों में झांकते हुए कहा ,रश्मि मैं तुमसे कुछ कहूं ?
रश्मि समझ रही थी कि वह क्या कहना चाहता है ।फिर भी वह बोली क्या कहना है ? कहकर उसने नज़रें झुका लीं ।
रोहित को भी समझ आ रहा था कि रश्मि समझ रही है जो वह कहना चाहता है ।बोला क्या तुम भी कुछ कहना चाहती हो ?
रश्मि खामोश रही ।
मैं समझ गया रश्मि , तुम्हारी खोमोशी ने मुझे मेरे संभाल का उत्तर दे दिया । यह सच है न?
रश्मि ने हां में सिर हिलाया फिर धीरे-धीरे बोली हां रोहित कुछ दिनों से अजीब सी महसूस हो रहा है ,जो बचपन से अभी तक कभी नहीं हुआ , जब तुम नहीं होते हो मन नहीं लगता, हर समय तुम मेरे आस पास ही रहो कभी अलग न रहो ऐसा मन होता है ।
हां रश्मि मैं भी कुछ समय से ऐसा ही महसूस कर रहा हूं किसी पर तुमसे अलग नहीं रहना चाहता ।रात में भी तुम्हारा ही ध्यान रहता है सुबह लगता न जाने कब से तुम्हें नहीं देखा है ।कहते कहते रोहित ने उसका हाथ अपने हाथों में ले लिया और उसकी आंखों में झांकने लगा । दोनों एक दूसरे को देखते रहे खामोश बगैर कुछ बोले।
रश्मि ! क्या हम दोनों एक नहीं हो सकते रोहित सहसा बोला ,साथ ही उसे लगा कि रश्मि नाराज तो नहीं हो जायेगी। लेकिन रश्मि तो शायद स्वप्न लोक में विचरण कर रही थी,उसने कुछ सुना ही नहीं ।
रश्मि ! रोहित ने उसके कंधे को हिलाया और रश्मि चौंक गयी ,बोली क्या हुआ ?
रोहित मुस्करा दिया और उसकी मुस्कराहट में न जाने क्या था कि उसने फिर अपनी नजरें झुका ली। रोहित ने आगे बढ़ उसके गालों को थपथपाया और हाथ पकड नरम घास के हरित बिछौने पर बिठा दिया वह पास ही बैठ गया । दोनों बहुत देर तक बगैर कुछ बोले ही बहुत कुछ बोलते रहे । आसमान में बादलों ने सूरज के खिलाफ घेराबदी शुरु कर दी थी ।

क्रमश

दुर्गा (कहानी)

बड़े से मैदान में बहुत सारे लोग जुड़े थे। आज राज्यपाल दुर्गा को उसके सामाजिक सराहनीय कार्य के लिए सम्मानित करने वाले थे। स्टेज से उसका नाम पुकारा गया। वह लोगों के बीच से होती हुई स्टेज की ओर बढ़ी। उसके कानों से कुछ आवाजे टकरा रही थी 'अरे यह तो दुर्गा है बहुत अच्छी है, समाज में सबका बहुत /यान रखती है। स्त्रियों के लिए क्या कुछ नहीं करती।'

अरे यह तो शुरू से ही सबका /यान रखती है। दुर्गा ने आती दूसरी आवाज को सुना, किसी से कोई बैर नहीं रखती। किसी को कोई परेशानी हो दुर्गा वहाँ जरूर पहुँचती है तीसरी आवाज आई।

- हमारे मोहल्ले मे ही रहती थी अब दूसरी जगह कही चली गई है हम तो बहुत अच्छे से जानते है एक और आवाज सुमाई दी इस प्रकार वहाँ बैठे सभी उसकी प्रशंसा के कसीदे पढ़ रहे थे।

वह सिर झुकाए बैठी थी निःशब्द निरन्तर पृथ्वी को देखे जा रही थी। उसकी आँखों में आँसू और होठों पर सिसकी नही थी। वह किसी विचार सागर में गोते लगा रही थी। आस पास कई लोग थे जो कुछ न कुछ बोल रहे थे। जैसा कि लोगों का स्वभाव होता है जहाँ जुड़े और मुँह खुला। फिर चाहे कोई पूजा हो जन्म यह मरण हो या इन्सानी फितरत है। जी तो यहाँ भी ऐसा ही माहौल था। पार्थिव शरीर सामने था और वहाँ जमा हुए लोगों का मुँह चल रहा था। लोग समयानुसार या स्थानानुसार ही, बाते करते है अतः जो व्यक्ति उस पार्थिव शरीर के आस पास उनका बोल कुछ इस तरह थे - बड़े अच्छे थे बेचारे भगवान की करनी देखा एकदम उठा लिया कहते हुए अपने आँचल से या रूमाल से कसकर आँखों को पोछते हालाँकि उनकी आँखों मे कोई नमी नही थी। वह ऐसा इसलिए कर रहे थे जिससे वह यह दर्शा सके कि मरने वाले के साथ वह बहुत ही आत्मीयता रखते है और उसके गुजर जाने का बहुत दुख है। यह भी सब जानते थे कि भगवान ने एकदम नहीं उठाया था वह तो चार साल से चेतावनी दे रहे थे।

पार्थिव शरीर का चेहरा खुला था लोग ऐसे देख रहे थे मानों उस चेहरे से कह रहे हो तुम जा रहे हो देखों तुम्हारे जाने का हमें कितना दुख है एक बार देख लो ताकि यह न कहो कि हमसे मोहब्बत नहीं थी जल्दी से देखों यह गमगीन मुखौटा अधिक समय तक नहीं रह पायेगा।

और बाहर जाकर या उस शरीर के पास से हटकर प्रतिक्रिया बदल जाती। शब्द घूम जाते।

एक महिला तो बहुत ही भावुक हो उठी - बहुत अच्छे थे, बहुत ही अच्छी आदत थी सबसे बड़े प्यार से बोलते थे। पूरे घर को बाँधकर रखा था। वह उसकी बात से मन ही मन मुस्कुरा उठी यह वही महिला थी जो जब भी किसी के पास बैठती बुराई करते नही थकती और आज प्रशंसा करते भी नहीं थक रही। उन्होंने तो बिखरे परिवार को जहाँ कोई भी साथ नहीं था बँधे परिवार की घोषणा कर दी। उस बँधे परिवार के सदस्य कहाँ थे ?

उसका /यान दूसरी आवाज की ओर गया अरे बहुत ही अच्छे और सुलझे इंसान थे ऐसा इन्सान आज के समय में मिलता कहाँ है ? यह वह भद्र महिला थी जो यह भी नहीं जानती थी कि सामने लेटा व्यक्ति कौन है ? क्या करता है ? कहाँ रहता है ? आते जाते कभी निगाह शायद पड़ी हो लेकिन उस महिला के चिर परिचित हो गया था वह व्यक्ति।

व्यक्ति के जाने के बाद एक नजर मे व्यक्ति की खूबियों का पता समाज लगा लेता है यह एक अच्छा हुनर होता है लोगों मे।

इसी प्रकार की अनगिनित बातें उसके कानों में पड़ रही थी।

और उनकी ओर एक नजर देखती फिर अपने विचारों में खो जाती। निःशब्द निर्लिपत बैठी थी वह।

बाहर कुछ लोग पार्थिव शरीर की अन्तिम क्रिया की तैयारी में लगे थे। वहाँ भी बातों का सिलसिला जारी था। उनके हाथ अर्थी तैयार कर रहे थे और वाणी मरने वाले के जीवन का इतिहास बयान कर रहे थे।

एक व्यक्ति बोला अजीब आदमी था परिवार को कभी चौन नहीं लेने दिया इसके चलते बच्चे बाहर गये तो चले ही गये पलटकर नहीं देखा बेचारी बीबी को तो साथ रहना ही था वह न होती तो कब का राम नाम सत्य हो गया होता।

अरे जब से देखा है ऐसा ही देखा आस पास वालों से भी लड़ता रहता था। ऐसे लोगों को भगवान भी देर से बुलाता है अपने पास वह भी सोचता होगा यहाँ आकर माहौल खराब करेगा रहने दो।

दूसरे की आवाज आई हाँ एक एक पैसे को तरसते रहे पत्नी और बच्चे वह तो इसकी पत्नी की मेहनत रंग लाई और बच्चे योग्य हो गये और अब खुश है लेकिन यह बेचारी इसको तो साथ रहना ही था फिर जाती भी कहाँ ?

हर चीज को एक एक पैसे को छुपा छुपा कर रखता आज साथ में क्या ले जा रहा है। सब यही छूट गया।

तीसरी आवाज - कैसे कैसे लोग होते है सब ऐसे दबाकर रखते है जैसे जाते समय कफन में जेब लगाकर सब भर ले जायेगे।

वह व्यक्ति किसी कार्य वश उस स्थान पर आया जहाँ वह पार्थिव शरीर था और वह बैठी थी सहसा उस व्यक्ति के शब्द बदल गये। पार्थिव शरीर को देखते हुए बोला 'कितने भले आदमी थे सबका कितना /यान रखते थे भगवान के आगे किसी की नहीं चलती और वह पल पल बदलते शब्दों को सुन रही थी बगैर कोई प्रतिक्रिया किए।'

उसके मन मस्तिष्क में विचारों की झंझावत थी वह सबकी बात सुन रही थी लेकिन उन बातों पर उसके विचार भारी पड़ जाते और कही हुई बातों पर से उसका /यान हट जाता और पुनः कोई आवाज उसके कानों से टकरा जाती। पल पल बदलती लोगों की बातों को सुन गिरगिट भी छुपकर जा बैठा होगा।

कुछ ही समय मे अर्थी तैयार हो गई। पार्थिव शरीर को अर्थी पर यथावत लिटाया गया और अर्थी को काँधे पर उठाने के लिए चार लोग आगे आये उन्होंने अर्थी को अपने काँधे पर उठाया और आगे बढ़े और लोग अर्थी के पीछे चल दिए। स्त्रियाँ थोड़ा आगे जाकर रूक गई फिर वापिस अपने अपने घर चली गई और वह वहीं खड़ी रह गई। कुछ समय तक राम नाम सत्य है उसके कानों से टकराती रही फिर विलुप्त हो गई वह आवाज और सहसा वह अपने हाथों मे पड़ी काँच की दो चूड़ियों को देखने लगी और अब उसके मुँह से अस्फुट से शब्द फूट पड़े।

'हाथ में पड़ी यह दो काँच की चूड़ी और माँग में जबरदस्ती का समाज के डर से लगाया गया आधी चुटकी सिन्दूर बस यही तो था मेरे पास वह भी तुमसे देखा न गया, वह भी लेकर चल दिए। हर पल मेरा सब कुछ छीनते ही तो रहे। जिन्दा रहते छीनते रहे और, अब अनन्त यात्रा पर निकलते समय भी छीन ले गये।''

और वह सिसक पड़ी। किसी को वह सिसकी सुनाई न दे जाये इसलिए उसने अपने आँचल से मुँह को कसकर दबा लिया और घर की ओर मुड़ गई उसने देखा सब जा चुके थे घर में उसकी एक मात्र बेटी थी। बेटा तो आया ही नही था।

वह उस व्यक्ति की पत्नी थी जो अभी अभी चार काधों पर चढ़ अन्तिम यात्रा पर निकला था। हाँ वह पत्नी थी उस व्यक्ति की। फिर सवाल उठता है कि जब वह उसकी पत्नी थी तो उसकी आँखो में आँसू और दिल में दर्द क्यों नही था।

यह समाज इस प्रकार की बाते जरूर सोचता और कहता है। पर कभी कोई व्यक्ति यह जानने का प्रयास करता है कि ऐसा क्यों ? कारण क्या है ?

मृत्योपरान्त कार्यक्रम चल रहा था सभी खाने में व्यस्त थे साथ ही उसके व्यक्तित्व पर टीका टिप्पणी भी चल रही थी। देखों बिल्कुल नहीं रोई किसी बात का दुख नहीं है आदि।

कुछ स्त्रियाँ तो उसे हत्यारा साबित करने का प्रयास कर रही थी। हो सकता है कि कुछ देकर मार दिया हो इसीलिए कोई अफसोस नही है वरना पति गुजर जाये और चेहरे पर शिकन भी न आये ऐसा भला होता है।

कुछ उसके चरित्र पर प्रश्नचिन्ह लगाने में भी नहीं चूक रहे थे। ऐसा नहीं था कि दुर्गा (उसका नाम दुर्गा था) को उनकी बाते सुनाई नहीं दे रही थी। वह सब सुन रहीं थी पर शान्त थी ऊपर से देखने में एकदम शान्त पर उसके अन्तर में तूफान उठ रहा था जो धीरे धीरे प्रचण्ड रूप लेता जा रहा था।

और सहसा एक गरजती सी आवाज ने सबको चौंका दिया। सब स्तब्ध हो उस दिशा में देखने लगे जिधर से आवाज आई थी। सामने मानों साक्षात दुर्गा खड़ी थी।

देखिए मैं नहीं जानती कि आप लोगों को मैं क्या सम्बोधन करूँ क्षमा करना। उसकी आवाज धीर गम्भीर कड़कती सी थी।

उसने कहा - हाँ मुझे कोई दुख नहीं है। मैंने अपनी छाती पीट कर आप लोगों के सामने दुख प्रदर्शन नहीं किया। रोते रोते बेहोश होने वाला दृश्य भी उपस्थित नहीं किया। आपकी हर बात सच है पर आप सब एक बात बताइए। आज आप लोग इतनी बाते बना रहे है, धर्म अधर्म का पाठ पढ़ा रहे है, यह धर्म उस समय कहाँ था यह समाज उस समय कहाँ था जब एक पन्द्रह साल की मासूम लड़की को एक बुजुर्ग के साथ जबरन शादी करने पर मजबूर किया गया था और उस समय भ आप सब समाज कहलाने वाले कहाँ थे जब उंगलियाँ चाटते हुए उस विवाह मे होने वाले भोजन का आनन्द ले रहे थे। यह समाज उस समय कहा था एक लड़की को बेवजह पीटा जाता उस समय आपको उसकी चीखती आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। उस समय आपकी यह संवेदना कहाँ मर गई थी जब भीषण ज्वर में तड़पती हाँफती घर के कामों में जुटी रहती खाना बनाकर लाती तो प्लेट उठाकर उसके मुँह पर इसीलिए मारी जाती कि रोटी एक ओर से थोड़ा टेढी है या सब्जी में नमक थोडा सा कम है। कहाँ था यह समाज उस समय जब शारीरिक मानसिक यातनाओं को सहती नजरे झुकाये रहती। है कोई जवाब आपके पास ? दुर्गा बोलती जा रही थी। सब स्तब्ध से उसे देखे जा रहे थे आज तक किसी ने दुर्गा की आवाज भी नहीं सुनी थी और आज उसका यह रौद्र रूप देखकर सभी निरूत्तर रह गये। और अपनी बात कहने के बाद दुर्गा बोली आप लोग जा सकते है। आगे से जब किसी के विषय में बोलना तो सोच समझ कर बोलना अब यह दुर्गा स्वयं और स्वयं जैसी सारी स्त्रियों के साथ खड़ी है। दुर्गा वहाँ से जा चुकी थी और कुछ ही समय मे वह स्थान खाली हो गया। आज भी वही समाज बोल रहा है यहाँ भी परन्तु कितना अन्तर है शब्दों में दुर्गा ने उन सबकी ओर देखा और सधे कदमों से स्टेज की ओर बढ़ गई।

शरद सिंह 'शरद'

लेखनी मे स्वर भरो माँ - शरद सिंह "शरद"

तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें

बलिदानों की अमर कथा को ,मुक्त कंठ से गायें।
तीन रगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।
स्वतंत्रता के हवन कुंड में, समिधा बनकर कूदे।
आजादी के सपने पाले,अपनी आंखें मूंदे।
एक मंत्र के उच्चारण ने,मिलकर हुंकार भरी ।
वीरों के विकराल रूप से, प्रभुसत्ता बहुत डरी।
संकल्पों का सिर पर बांधा,तब केसरिया बाना।
बांध मुष्टिका ग्रह त्यागकर,अपना सीना ताना।
राष्ट्र मुक्ति के आव्हान से,सोया भारत जागा।
और गुलामी के बंधन का,बिखरा इक इक धागा।
भारत का इतिहास अमिट है,इसकी अलख जगानी।
भारत के कोने कोने में ,यह गाथा पहुंचानी।
सकल विश्व को शिक्षा देकर,विश्व गुरु कहलायें।(1)
तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।

कुछ गुमनाम शहीदों के हम ,करवाते हैं दर्शन,
जिनके बलिदानों से महका,अपना सूना आंगन।
सत्याग्रह में साथ दिया था,सेनापति बापत ने।
पोटी श्री रामुलु, पीर अली ,पूत जने भारत ने।
सत्तावन के संघर्षों में ,तब संख्या खासी थी।
पीर अली के साथ मिली थी,चौदह को फांसी थी।
भारत माँ का झंडा लेकर जब मातंगिनी बढ़ती ।
भारत छोड़ो आंदोलन में ,गोरों की गोली चलती।
तारा रानी श्रीवास्तव के , था आंखों में सपना।
हमें सिखाती उनकी गाथा,गोली खाकर बढ़ना।
ऐसी शौर्य पराक्रम भाषा,जीवन मे अपनायें।(2)
तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।
नेहरू तिलक गांधी लाला,शास्त्री लाल बहादुर
अपना फौलादी सीना ताने, थे पटेल जी आतुर।
रक्त धमनियों का खौला जब,शत्रु को ललकार दिया।
सहन शक्ति ने संयम तोड़ा,बढ़कर प्रतिकार किया।
रक्त बूँद से तिलक सुशोभित,अपनी खड्ग संभाली।
अरि की रक्त पिपासा लेकर, प्रकट हुई महाकाली।
क्रांति समर के महानायक हैं,मंगल पाण्डेय वीर।
राजगुरु सुखदेव भगत को, न फांसी करे अधीर।
आजादी के परवाने थे, चन्द्र शेखर आजाद।
नेताजी की हिन्द फौज का,करे खून सिंह नाद।
शांति पाठ के साथ जिव्हा पर,क्रांति मन्त्र को लाएं।(3)
तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।

अपनी सन्तति पीठ बांधकर, बढ़ती लक्ष्मी बाई।
इतिहासों के पृष्ठों में भी, स्वर्णिम जगह बनाई।
चेनम्मा जी बेगम हजरत ,अरु भीकाजी कामा।
कमला नेहरू अरुणा आसफ,तजती अपनी यामा।
कहीं सुचेता कृपलानी थी,लक्ष्मी सहगल दुर्गा।
स्वातंत्र्य के महासमर में , बने फिरंगी मुर्गा।
भगत सिंह का साथ निभाती,अपनी दुर्गा भाभी।
हथियारों को करा मुहैया, भेष बना मायावी।
युद्ध क्षेत्र में कूद पड़ी थी, ले तलवार दुधारी।
अमिट नाम पन्नों में अंकित, वीरव्रती झलकारी।
वीर पुरूष के संग पूजित हो,भारत की ललनाएँ।(4)
तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।

विश्व विजेता के सपने को ,पौरुष धूल चटाते।
हम गौरी के अभिमानों को,सत्रह बार मिटाते।
युद्ध भूमि में बलि होने की ,परिपाटी के पोषक।
उसको स्वर्ग भेजना सीखा,जो होते हैं शोषक।
स्वाभिमान की खातिर राणा,घास की रोटी खाते।
स्वामिभक्ति की रक्षा खातिर,चेतक जान लुटाते।
मुगल काल में नहीं डरे थे, छत्र साल बुंदेला।
मारवाड़ की शान बढ़ाता, ,दुर्गा दास अकेला।
कहानी सुनकर बनना चाहते,बच्चे वीर शिवाजी।
जिनकी तलवारों से कॉंपे, औरंगजेब से काजी।
संकल्पों के सम्मुख पानी, भरती हैं बाधाएं।(5)
तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।

आजादी के अमर गान को ,कवियों ने भी गाया।
भारत को वैभव दिलवाने, सोया भाग्य जगाया।
माखन जी के अंतर्मन की,कहे पुष्प अभिलाषा।
बुंदेले हर बोलों की जय,सुभद्रा जी की भाषा।
पानी में भी आग लगाते, श्रीधर जी महावीर।
रामनरेश, मैथिली पढ़कर, उठ जातीं शमशीर।
सारे जहां से अच्छा अपना ,गा रहे थे इकबाल।
जयशंकर दिनकर के साथी,नवीन ठोंकते ताल।
प्रेमचंद की अभिनव कृतियां,हैं भारत की थाती।
बंकिमजी की अमर गायिकी,शस्य श्यामला गाती।
राष्ट्रवाद की स्वर लहरी फिर,जिव्हा पर चढ़ जायें।(6)
तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।

सत्य सनातन परिपाटी के,हम सब हैं गुण गायक।
नीव के ऊपर खड़ी इमारत, भार लिये महानायक।
दन्त ,शावकों के गिनते हैं, खेल खेल में बालक।
दिशा बोध के हम ज्ञाता है , हैं सच्चे अधिनायक।
प्रातः काल में विश्व शांति के, मंत्र यहीं पर गाते।
पुण्य भूमि के आरधन में, देव पुरुष झुक जाते।
पाप पुण्य में परिवर्तन को, नीर यहाँ पर बहता।
विजय मृत्यु पर पा जाता है, महा मृत्युजय कहता।
अवतारों की पुण्य धरा का, रज कण भी चंदन है।
जो ललाट पर धारण करले, उसका अभिनन्दन है।
भारत माता के मंदिर में, मिलकर अर्घ्य चढायें।
(7)
तीन रंगों के ध्वज को लेकर,अम्बर तक फहरायें।

डॉ राजीव कुमार पाण्डेय
वेवसिटी, गाजियाबाद
मोबाइल–9990650570

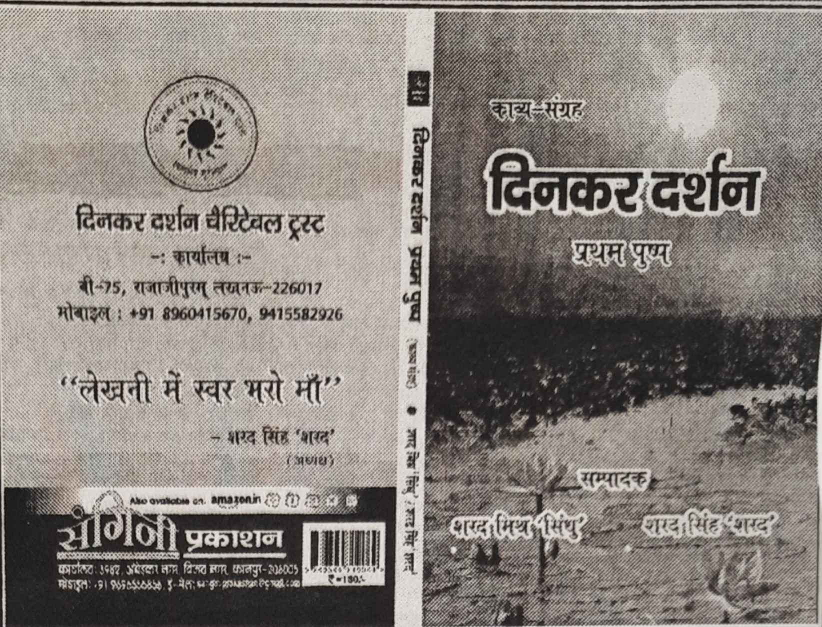

दिनकर दर्शन चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित " दिनकर दर्शन साहित्य प्रवाह " के सौजन्य से शीघ्र प्रकाश्यकृति दिनकर दर्शन प्रथम पुष्प

नवदुर्गा पूजनोत्सव

करो देवि पूजा दिवा रात में भी,
चलो मातु चौकी चढ़ावा चढ़ायें ।
भरो थाल रोली जले दीप बाती,
तथा पुष्प माला जिसे मातु भाये ।।
चने को उबालो बघारो उसे भी,
रवा भून के ही प्रसादी बनायें ।
घरीयाल घण्टा तथा शंख बाजे,
उठो प्रात ही मातु को पूज आयें ।।
(महा भुजंग प्रयात छंद में)
डॉ सत्यदेव प्रसाद द्विवेदी

सैनिकों की धमनी में रक्त है उबल रहा

रिपुओं को मनमानी करने न देंगें हम।
पत्थर चलाने वाले तुच्छ देशद्रोहियों को,
भारत में अब विष भरने न देंगे हम।
खो चुके बहुत वीर सैनिक है सीमा पर,
देश के सपूत और मरने न देंगें हम।
लड़तें रहेंगे सदा शत्रुओं के अंत तक,
बैरियों को पांव यहां धरने न देंगे हम।।
डॉ.विद्यासागर मिश्र 'सागर'
सीतापुर / लखनऊ,उ0 प्र0

'दोहा

कैकेई पछता रही, हुआ गलत यह काम ।
दशरथ रो रो मर गये ,छूटी हाथ लगाम ।।

सूर्य,चन्द्र,भू , गगन सब, गाते है गुणगान ।
राम तुम्ही से जगत को ,मिलती है पहचान ।।

उग्र जलधि को देखकर, बढ़ता हुआ घमंड ।
क्रोधित लक्ष्मण ने कहा,भ्रात इसे दो दंड ।।

कुपित राम को जानकर ,सागर आया पास
मुझ पर सेतु बनाइए, मैं तेरा हू दास ।।
अरविन्द रस्तोगी

भरा न हो जिसमें जोश

भरा न हो जिसमें जोश वो रवानी कैसी।
मिले न जिससे ज्ञान वो कहानी कैसी।।
अपनी ताकत को देख तुम इतराओ मत यारों,
देश के काम न आये वो जवानी कैसी।।
हमको नहीं किसी का, अपमान करना चाहिए।
हमें अपने लक्ष्य का, ध्यान करना चाहिए।।
सब प्यार–मोहब्बत, से रहें इस समाज में,
इन्सान को इन्सान का, सम्मान करना चाहिए।।
मनमोहन बाराकोटी
'तमाचा लखनवी'

पण्डित श्याम सुन्दर शर्मा

पिता : [illegible]
जन्म तिथि : [illegible]
शिक्षा : [illegible]
व्यवसाय : शिक्षण
प्रकाशित : [illegible]
ब्रह्मलीन : [illegible]

मङ्गलाचरण

[illegible]

ध्येय

[illegible]

' वाह क्या खूब !'

आज पता चला तुम को कि हम पागल हैं।
हमें तो ये उस दिन से ही पता है ,
जिस दिन आँखें खोलीं थी हमने।
और दुनियां को नजर भर देखा था हमने।
पागलपन का दौर था ,
कुछ कर बैठे थे
ऐसा ,कि पागलों की दुनियां में,
फिर से कदम रक्खा हमने।
बुरा मत मानो कि तुमको भी शामिल कर लिया है हमने ,
चूंकि एक सी शक्ल पायी है हमने।
अनगिनत किस्म के जीव हें इस दुनियां में , शुक्रिया दोस्त कि पहचान कर ली है
तुमने।
जिनेन्द्र कुमार जैन ,
सी– 1/302 3तक फ्लोर टाबर
हाइट अपार्टमेंट ,फ – ब्लाक
,पीतम पुरा दिल्ली (110034)

'जग हमको हिंदू कहता '

जग हमको हिंदू कहता छवि करुणा की पर्याय बनी ।
सदा क्रूरता के विरुद्ध रहती है अपनी रार ठनी ।।
सृष्टि जहां से भी है उपजी
हो गंतव्य जहां तक का ,
है मेरा इतिहास वहीं से
रखता हूं ब्यौरा सबका ,
संरक्षित मानवता हमसे ,है पियूषमय आचमनी ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश हृदय में,
काली दुर्गा रहती हैं,
और नाड़ियों में गंगा कावेरी ,
नदियां बहती हैं .
निर्दोषों के कभी रक्त से,खड्ग हमारी नहीं सनी ।।
ज्ञान सँजोया नालंदा में,
मेवाड़ों में पौरुष है .
एक हाथ में फरसा है तो,
दूजे कर में शुभ कुश है ,
कोख सतत वीरता जन रही , अग्नि स्वयं हवि भी जननी ।।
हमने तैमूरों , चंगेजो
नर पिशाच को झेला है,
रक्त सनी होलिका,
घृणित नादिरशाहों सँग खेला है,
किंतु न नीची दृष्टि किये हम, भृकुटि पाप पर रही तनी ।।
भाल हमारा बना हिमालय,
सागर पांव पखारे है,
अकुलाई धरती हर युग में,
मेरी ओर निहारे है ,
सतत मनुजता की रक्षा हित,खड्ग खनकती है अपनी ।।
हां हिंदू हूं, हां हिंदू हूं,
हां हिंदू हूं कहता हूं,
हो जग का कल्याण,
साधनारत इस कारण रहता हूं,
हिंस्र राक्षसों की छाती को करता आया हूं छलनी ।।
शरद मिश्र 'सिंधु'

प्रिय तुम सपने में आना

प्रिय तुम सपने में आना ।
गोधूलि की बेला में जब संझाबाती होती है।
मौलश्री की मादक खुशबू तन मन को हर लेती है।
नभ में बिखरे चांद सितारे मन को मोहित करते हैं।
इनसे जो अनुबंध पुराना उसको ताजा कर जाना।
प्रिय तुम सपने में आना।
प्रिय तुम सपने में आना।
जब दिन लगते बहुत बड़े थे रात जरा ना कटतीं थी।
खगकुल का कलरव था गहरा मन पर घातें लगती थी।
बारिश की बूंदों की मानिंद सुधिया अपनी बरसी थी।
मन मयूर बन नाचे मोरा इंद्रधनुष सा छा जाना ।
प्रिय तुम सपने में आना।
प्रिय तुम सपने में आना।
सावन की घनघोर घटाएं उमड़ घुमड़ छा जाती थी।
मन की किसी दबी इच्छा को सावन सा हरियाती थी।
हरी चूड़िया धानी चुनर मेहंदी की सोंधी खुशबू।
किसी नीम के सघन वृक्ष पर झूला एक सजा जाना।
प्रिय तुम सपने में आना।
प्रिय तुम सपने में आना।
बिखरे जो मोती हैं मन के उनको अंजुरी में भर के।
रंग बिरंगे फूल सरीखे मुस्काएं हम हर एक पल में।
तितली के पीछे दौड़े हम भर ले आंखों में रंग कितने।
मन का जो कोना था रीता उसको अब तुम भर जाना।
प्रिय तुम सपने में आना।
प्रिय तुम सपने में आना।

स्वरचित रचना

डॉ निष्ठा मिश्रा
हिन्दी विभागाध्यक्ष
जगन्नाथ प्रसाद भगवान देई
साहू महाविद्यालय
लखनऊ।
सम्पर्क सूत्र
८४१८०४८६२६,
६७६२७०६२२३.

केसरिया स्वर' शीर्षक आवंटन के अवसर पर उल्लासमय वातावरण में हुई परिचर्चा

'केसरिया स्वर' शीर्षक आवंटित होने के उपलक्ष्य में आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार केशरी प्रसाद शुक्ल ने किया, प्रखर वक्ता एवं भाजपा नेता अतुल दीक्षित एवं वरिष्ठ साहित्यकार सी0पी0 सिंह, हरी प्रकाश अग्रवाल, डा0 सत्यदेव द्विवेदी पथिक विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थिति रहे। मुख्य अतिथि भाजपा मीडिया सह संयोजिका अवध प्रौंत कु0 स्वाती सिंह ने भी सभी के स्वर में स्वर मिलाते हुए केसरिया स्वर टीम को शुभकामनाएँ दी तथा केसरिया स्वर की प्रधान संपादक शरद सिंह शरद ने सभी का स्वागत केसरिया स्वर कार्यालय बी–95, बी–ब्लाक, राजाजीपुरम, लखनऊ में किया। संगोष्ठी में अनिल किशोर शुकल, निडर, मनमोहन बाराकमेटी 'तमाचा लखनवी', अरविंद रस्तोगी, राजकिशोर त्रिवेदी, एस0एन0 त्रिपाठी, आदि रचनाकारों ने सहभागिता की तथा संचालन शरद मिश्र 'सिंधु' अधिवक्ता ने किया।

चेतना साहित्य परिषद की गोष्ठी सम्पन्न

लखनऊ के ऐतिहासिक चेतना साहित्य परिषद की साप्ताहिक काव्य गोष्ठी सांय 6:30 बजे बाल संग्रहालय चारबाग में संपन्न हुई, प्रत्येक शानिवार को वर्षों से संचालित चेतना साहित्य परिषद की काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता भोलानाथ अधीर ने किया तथा संचालन प्रमोद द्विवेदी प्रमोद का रहा। गोष्ठी में अरविन्द झा, संजय मिश्र रजोल, रमाशंकर सिंह सहित भारी संख्या में रचनाकार उपस्थित रहकर उत्कृष्ट रचनाओं से सराबोर करते रहे।

जनपद न्यायालय प्राँगण लखनऊ में डाकघर की माँग

विगत दिनों अधिवक्ताओं ने लखनऊ के जनपद न्यायालय प्राँगण में डाकघर की स्थापना के लिए हस्ताक्षर अभिमान चलाया और उसे रक्षामंत्री से लेकर शासन के संबंधित सभी अधिकारियों को प्रेषित किया। हस्ताक्षर अभियान में, अधिवक्तागण कु0 रचना मिश्रा 'रिया'; रणवीर सिंह, गौरव, भव्य, शिखरदीप, आदि अधिवक्ता शामिल रहे।

हिन्दी बने विश्व की भाषा

बिगुल बजाना ही होगा,
हिन्दी को उसका समुचित
सम्मान दिलाना ही होगा।

तुलसी,सूर,कबीरा वाली
मधुरिम बानी हिन्दी में,
प्रेमचन्द्र से कथाकार की
अमर कहानी हिन्दी में,
हिन्दी में है ज्ञान और
विज्ञान बताना ही होगा,
हिन्दी को उसका समुचित
सम्मान दिलाना ही होगा।

शहिन्दी लाओश नारा केवल
हमको नहीं लगाना है,
हर प्रकार से हिन्दी को
ताकतवर हमें बनाना है।
हिन्दी भाषा के हित में
अभियान चलाना ही होगा,
हिन्दी को उसका समुचित
सम्मान दिलाना ही होगा।

आओ हम यह प्रण कर लें
सब काम करेंगे हिन्दी में,
छोड़ विदेशी भाषा को
बस नाम करेंगे हिन्दी में।

मूँग दल रही छाती पर जो
उसे भगाना ही होगा,
हिन्दी को उसका समुचित
सम्मान दिलाना ही होगा।

रोजी–रोटी की खातिर
संघर्ष करेंगे हिन्दी में,
नव प्रयोग,नव छन्दों से
भाण्डार भरेंगे हिन्दी में।
आँख–मूँद सोया समाज
झकझोर जगाना ही होगा,
हिन्दी को उसका समुचित
सम्मान दिलाना ही होगा।

देवेश द्विवेदी देवेश
द्विवेदी निवास
ई– १२२६, राजाजीपुरम्
लखनऊ–२२६०१७
सम्पर्क सूत्र– ६२३६६८८८३३
अणुडाक–
kavidevesh@gmail-com

जय श्री राम

टड़ियन हनुमान मन्दिर 'ट्रस्ट'

महन्त रामाकान्त दास उर्फ सिंह
संस्थापक/अध्यक्ष

मधु सिंह, बेबी दास, श्यामाकान्त सिंह, सुरेन्द्र सिंह, मनोज शुक्ला, आशीष मिश्रा

पत्रांक 12
दिनांक 1/9/22

शुभकामनाओं सहित

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि लखनऊ से " केसरिया स्वर " (पाक्षिक) के प्रकाशन की शुरुआत होने जा रही है। समाज को आज केसरिया क्रांति की आवश्यकता है। केसरिया स्वर इस क्रांति मे सनातन संस्कृति के प्रचार प्रसार का ध्वजवाहक बन अपनी महंत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

केसरिया स्वर खूब पल्लवित हो पुष्पित होमुखरित हो। इसके समस्त पदाधिकारियों व सहयोगियों पर हनुमत कृपा बनी रहे।

सभी को बहुत बहुत शुभकामनायें।

भवदीय

Ramakant Singh

महंत रामाकान्त दास जी
अध्यक्ष टडियन हनुमान मंदिर 'ट्रस्ट'

फोन न0. – 2446377

पायनियर माण्टेसरी स्कूल

649, उदयन –1 सेक्टर – 3 एल्डिको कॉलोनी, लखनऊ

दिनांक 01-09-2022

पत्रांक..........

शुभकामना सन्देश

प्रिय सम्पादक महोदय ,

मुझे यह जानकार अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि लखनऊ से 'केसरिया स्वर' नाम से पाक्षिक समाचार पत्र का प्रकाशन आरंभ होने जा रहा है। मुझे आशा है कि 'केसरिया स्वर प्रदेश व देश मे अपनी कलम से एक स्वच्छ, सामाजिक समरसता और राष्ट्रभक्ति से ओत प्रोत वातावरण का निर्माण करने की दिशा का एक अच्छा माध्यम बनेगा। मै केसरिया स्वर के प्रकाशन एव सम्पादन से जुड़े सभी भाइयो एवम बहनो को बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

B Singh
(बृजेन्द्र सिंह)

प्रतिष्ठा में,
श्री शरद मिश्रा जी
सम्पादक,
केसरिया स्वर (पाक्षिक), लखनऊ।

रावण को मारने का जो शौक पालते हैं, वनवास पर निकल कर जंगल खंगालते हैं : शरद मिश्र 'सिंधु' अधिवक्ता

कलराज मिश्र
राज्यपाल, राजस्थान

Kalraj Mishra
Governor, Rajasthan

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि 'केसरिया स्वर' (पाक्षिक) लखनऊ द्वारा विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

पत्रकारिता को लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ इसीलिए कहा जाता है कि इसके जरिए जनता को अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता के साथ कर्तव्यों की सीख मिलती है। मैं यह मानता हूं कि लोकतन्त्र की जड़ों को सींचने और उसे सदा हरा रखने का कार्य पत्रकारिता के जरिए ही सम्भव होता है।

उम्मीद करता हूं कि आपका संगठन पत्रकारिता के स्वस्थ मूल्यों का निर्वहन करते समाज एवं राष्ट्र के लिए निरंतर उत्कृष्ट कार्य करता रहेगा।

प्रकाशन के लिए बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

(कलराज मिश्र)

MANGUBHAI PATEL
GOVERNOR, MADHYA PRADESH
BHOPAL - 462052

मंगुभाई पटेल
राज्यपाल, मध्यप्रदेश
भोपाल - 462052

क्रमांक 727/राजभवन/2022
भोपाल, दिनांक 08 सितम्बर, 2022

संदेश

हर्ष का विषय है कि पाक्षिक वैचारिक पत्र केसरिया स्वर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश से प्रकाशित होने जा रहा है। पत्रिका के प्रवेशांक की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वर्तमान सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिदृश्य के साथ-साथ वैचारिक चिंतन के द्वारा भविष्य की चुनौतियों के संबंध में समाज में जागरूकता का संचार और दिशा-दर्शन करना पत्र, पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है।

आशा है, केसरिया स्वर पत्रिका समकालीन पत्रकारिता में वैचारिक गंभीरता और सामाजिक सरोकारों के प्रति सामाजिक संचेतना निर्माण की विषय वस्तु प्रस्तुत करने में सफल होगी।

शुभकामनाएं,

(मंगुभाई पटेल)

Rajendra Vishwanath Arlekar
Governor
Himachal Pradesh

राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर
राज्यपाल
हिमाचल प्रदेश

संदेश

पाक्षिक वैचारिक पत्र 'केसरिया स्वर' के प्रवेशांक की हार्दिक शुभकामनाएं।

मैं आशा करता हूं कि पत्र में राष्ट्री सोच को वैचारिक स्तर प्रदान करते हुए सामाजिक सरोकार के विषयों पर भी उत्तम प्रकाशन से समाज को जागरूक करने का प्रयास किया जाएगा।

राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर

दयाशंकर सिंह
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
परिवहन विभाग, उत्तर प्रदेश

कक्ष सं. 63A-63C, विधान भवन, लखनऊ
दूरभाष नं. : 0522-2238071, 2213259

दिनांक : 23-09-2022

:: शुभकामना ::

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि भारतीय मनीषा के विचारकों द्वारा पाक्षिक वैचारिक पत्र 'केसरिया स्वर' के प्रकाशन का संकल्प लिया गया है।

मैं 'केसरिया स्वर (पाक्षिक)' के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(दयाशंकर सिंह)

डा. नीरज बोरा

No. 702521

दिनांक–31.08.2022

शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि लखनऊ से "केसरिया स्वर" नामक हिन्दी पाक्षिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ होने जा रहा है। ... देकर उसे सार्थक सोपान प्रदान किया।

मुझे पूरा विश्वास है कि लखनऊ से प्रकाशित होने वाला यह पत्र अपने शीर्षक के अनुरूप केसरिया स्वर की ... निभाएगा। मैं 'केसरिया स्वर' के प्रकाशन व सम्पादन से जुड़े सभी ... को बधाई देता हूं।

शुभकामनाओं सहित,

प्रतिष्ठा में,
श्री शरद मिश्र जी,
सम्पादक,
केसरिया स्वर (पाक्षिक), लखनऊ।

Prof. Alok Kumar Rai
Vice-Chancellor

लखनऊ विश्वविद्यालय
University of Lucknow

सन्देश

[illegible]

(प्रो० आलोक कुमार राय)

भारतीय जनता पार्टी

स्वाती सिंह

ई-मेल : sitracity2000@gmail.com

दिनांक : 21-09-2022

शुभकामना सन्देश

प्रिय सम्पादक महोदय,

मुझे यह जानकर अपार खुशी हुई है कि लखनऊ से केसरिया स्वर नाम से पाक्षिक समाचार पत्र का प्रकाशन आरम्भ होने जा रहा है। ... भाइयों एवम बहनों को बधाई देती हूं।

शुभकामनाओं सहित,

प्रतिष्ठा में,
श्री शरद मिश्र जी
सम्पादक,
केसरिया स्वर (पाक्षिक), लखनऊ।

(स्वाती सिंह)

पता : प्रथम तल, मदन पैलेस, 14 स्टेशन रोड, लखनऊ - 226001
Page : swatisinghbcottlucknow | Swati Singh | @Swatiabs

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक दिनकर दर्शन चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा नमन प्रकाशन 210 चिंटल्स हाउस स्टेशन रोड लखनऊ से मुद्रित कराकर बी–75, राजाजीपुरम लखनऊ–226017 से प्रकाशित संपादक–शरद मिश्र मो0– 8960415670
पी आर बी अधिनियम, 1867 की धारा 7 के अन्तर्गत समाचार पत्र में प्रकाशित सभी लेखों/समाचारों की जिम्मेदारी सम्पादक की होगी। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ मान्य होगा।